सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली

●

श्रीधर शास्त्री
पंडित परिषद्, प्रयाग

●

२०१२ **शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग** २५ रुपया
१८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद

सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली

●

श्रीधर शास्त्री
पंडित परिषद्, प्रयाग

●

शास्त्री प्रकाशन
१८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद

●

एकेडमी प्रेस, इलाहाबाद

●

२०१२

●

मूल्य : २५/-



।। विनम्र निवेदन ।।

पूज्य पिताश्री पण्डित दीनबन्धु मिश्र ने सन् १९३४ में एक सरयूपारीण गोत्रावली प्रकाशित की थी, जिसका द्वितीय संस्करण परिवर्तनों के साथ सन् १९६४ में प्रकाशित हुआ। दोनों संस्करण पर्याप्त समादृत हुए।

सन् १९७८ में पूज्य पिताश्री का शरीरान्त हो गया। उनकी स्मृति में मैंने कर्मकाण्ड की अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं, जिसे देखकर सरयूपारीण ब्राह्मणों की वंशावली की भी अपेक्षा की जाने लगी। मैंने दायित्व स्वीकार किया। इस सन्दर्भ में पूर्व प्रकाशित निम्न वंशावलियों को देखने का समय मिला।

१– पण्डित कोदूराम पाण्डेय, वरेरा, मध्य प्रदेश के यहाँ की ब्राह्मण वंशावली; जिसकी अनुकृति संवत् १९४९ सन् १८९२ में पण्डित गुरू प्रसाद त्रिपाठी पौराणिक, बु० लहगी, मध्य प्रदेश ने तैयार करनी प्रारम्भ की, किन्तु पूर्ण नहीं हो सकी। इनके अधूरे काम को संवत् १९६५ सन् १९०८ में पण्डित तुलसीराम, विदुआ, सिहोरा, मध्य प्रदेश ने पूरा किया। यह वंशावली कम से कम दो सौ वर्ष पुरानी लगती है, जिसके आधे भाग १७ पृष्ठों में सरयूपारीण ब्राह्मणों का तथा आधे भाग १७ पृष्ठों में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का परिचय है।

२– संवत् १९६६ सन् १९०९ में रायबहादुर पण्डित देवदत्त पाण्डे, फैजाबाद ने एक सरयूपारीण ब्राह्मण संक्षिप्त वंशावली प्रकाशित की थी।

३– सन् १९१४ में प्रयाग निवासी पण्डित भोलानाथ अग्निहोत्री ने सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली (सरयूपारीण ब्राह्मण द्विजोत्पत्तिः) प्रकाशित की थी जो पण्डित देवदत्त पाण्डे की अनुकृति थी।

४– पण्डित इन्द्रदेव प्रसाद चतुर्वेदी, प्रयाग ने संवत् १९८३ सन् १९२६ में श्री सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली प्रकाशित की थी जिसका द्वितीय संस्करण संवत् १९८९ में प्रकाशित हुआ।

५– पण्डित दीनबन्धु मिश्र ने सन् १९३४ में सरयूपारीण ब्राह्मण गोत्रावली प्रकाशित की थी जिसका नया संस्करण सन् १९६४ में प्रकाशित हुआ।

६– सन् १९७८ में काशी से पण्डित राजनारायण शास्त्री ने एक श्री सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली प्रकाशित की थी।

७– पण्डित रामनिहोर पाण्डेय, इलाहाबाद ने अभी कुछ वर्ष पूर्व सम्पूर्ण ब्राह्मण वंशावली (सरयूपारीण गोत्रावली) प्रकाशित की है। पुस्तक में कहीं सन्-संवत् नहीं है।

८– एक वंशावली चिकित्सक चूड़ामणि पण्डित ठाकुरप्रसादमणि त्रिपाठी, प्रयाग ने तैयार की थी; जो सम्प्रति अप्राप्त है।

इन प्राप्त वंशावलियों में बड़ा ही विरोधाभास है। बड़ी भ्रान्तियाँ हैं। जिनके कुछ उदाहरण आगे दिये गये हैं :–

सबसे अधिक अपराध सरयूपारीण ब्राह्मणों की उत्पत्ति के इतिहास के साथ किया गया है।

पण्डित भोलानाथ अग्निहोत्री ने अपनी वंशावली में पौराणिक शैली में ५४ श्लोकों में सरयूपारीण ब्राह्मणोत्पत्ति की जो कथा लिखी है, उसके अनुसार श्री रामचन्द्र के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने के बाद जब सोलहों याज्ञिक ब्राह्मण अपने निवास कान्यकुब्ज प्रदेश में जाने को प्रस्तुत हुए तो श्रीराम ने उन्हें अपने ही राज्य में टिक जाने का उनसे अनुरोध किया और धनुष उठाकर एक बाण चलाया जो अयोध्या से पचीस योजन दूर घाघरा और सरयू के संगम पर गिरा। इसी पचीस योजन के अन्तर्गत सारी भूमि श्रीराम ने उन ब्राह्मणों को दान दे दी। शर (बाण) वार (निशाना) किए जाने के कारण सरयूपार के इस क्षेत्र को तभी से शराबार सरवार कहा जाने लगा और वहाँ के निवासी ब्राह्मण सरवरिया कहलाने लगे।

सर एस० एलियट ने अपनी सप्लीमेण्टली ग्लासरी में कान्यकुब्जों की पाँच शाखाओं में एक बताया है जो कन्नौज के रहने वाले थे और सरवार में फैल गये हैं।

इसी से मिलती हुई टिप्पणियाँ सर जान वोम्स, मिस्टर एम०ए० शेरिंग तथा श्री डब्लू क्रुक ने भी लिखी हैं। मिस्टर क्रुक ने लिखा है कि कान्हा और कुब्जा दो भाई थे, जिनकी संतान कान्यकुब्ज हुई। इन्हीं कान्यकुब्जों की एक शाखा सरवरिया लोग हैं, जो सरयू नदी के आस-पास रहते हैं। राजा अज के समय में ये लोग वहाँ आए थे।

इस तरह की बातें लिखने वाले भ्रान्त थे, इतना ही कहा जा सकता है। सर्वप्रथम राजा अज के समय में ब्राह्मणों के दश भेद थे, ऐसा सन्दर्भ किसी भी पुराण में नहीं मिलता है।

हमारे देश के प्राचीन इतिहास को बताने वाले पुराण ही हैं। वायु पुराण में भुवन विन्यास–(सृष्टि का विस्तार) प्रसंग में ब्रह्मा जी के जन्म से ब्राह्मणों के जन्म तक की कथा है। अन्य पुराणों में भी भुवन विन्यास का विस्तृत वर्णन है किन्तु राजा अज के समय में दशविध ब्राह्मणों की उत्पत्ति का सन्दर्भ कहीं किसी पुराण में नहीं मिलता।

जहाँ तक भगवान श्री राम के अश्वमेध यज्ञ की कथा है, बाल्मीकि रामायण के अनुसार नैमिषारण्य क्षेत्र में गोमती नदी के तट पर यह यज्ञ सम्पन्न हुआ था, जिसमें वामदेव, वशिष्ठ, जाबालि आदि ऋषि-मुनियों ने भाग लिया था। साथ ही वहीं नैमिषारण्य क्षेत्र में गोमती नदी के तट पर एक वर्ष तक दान कार्य चलता रहा।

सरयूपारीण ब्राह्मणों में वामदेव, जाबालि के ब्राह्मण नहीं मिलते। अतः यह कथन सर्वथा भ्रमपूर्ण है कि श्रीराम के यज्ञ में भाग लेने वाले ऋषियों के गोत्रज सरयूपारीण ब्राह्मण हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि शरवार में शर का अर्थ वाण और वार का अर्थ निशाना कहा गया है। निशाना बोधक वार शब्द संस्कृत ग्रंथों में प्राप्त नहीं है। भगवान् श्रीराम के समय में वार शब्द कहाँ था।

एक वंशावली लेखक ने जैमिनी संहिता का उल्लेख किया है, किन्तु पूरा श्लोक नहीं दिया, जिससे उसकी खोज की जा सके।

सर्वप्रथम यह देखना होगा कि ब्राह्मण कहाँ उत्पन्न हुए। पुराणों को देखने और पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि देवगण हिमालय पर्वत पर (पामीर का पठार) अथवा उसके आस-पास रहते थे और उसी की उपत्यिका में महानतम ऋषियों का भी निवास था। पुराणों में हिमालय पर्वत शृंखला के तट भाग को, अत्यन्त पवित्र माना है। यहाँ पर ऋषियों का निवास होना सम्भव लगता है।

पौराणिक सन्दर्भों के अनुसार देवराज इन्द्र का आतिथ्य स्वीकार कर अपनी राजधानी को लौटते हुए राजा दुष्यन्त ने तपस्वियों के परम क्षेत्र हेमकूट नाम किम्पुरुष पर्वत को देखा था। पद्मपुराण में वर्णन आया है :-

दक्षिणे भारतं वर्ष उत्तरे लवणोदधेः । कूलादेव महाभाग तस्य सीमा हिमालयः।।
ततः किंपुरूषं हेमकूटादधः स्थितम् । हरि वर्ष ततो ज्ञेयं निवधोवधिरुच्यते।।

इसी प्रकार विष्णु पुराण में वर्णन प्राप्त है :-

भारतं प्रथमं वर्ष ततः किम्पुरुषं स्मृतं। हरिवर्ष तथैवान्यत मेरो दक्षिणो द्विजाः।

इसी तरह बाराह पुराण में भी प्रसंग यह लिखा है, कि महर्षि पुलस्त्य ने धर्मराज युधिष्ठर से यात्रा सन्दर्भ में बताया कि-ततो गच्छेत् राजेन्द्र देविकां लोक विश्रुताम्। प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ।।

देविकायास्तटे वीरनगरं नाम वैपुरम्। समृद्ध्यातिरम्यांच पुलस्त्येन निवेशितम्।।

अर्थात हे राजेन्द्र लोक विश्रुत देविका नदी को जाना चाहिए जहाँ ब्राह्मणों की उत्पत्ति सुनी जाती है। देविका नदी के तट पर वीरनगर नामक सुन्दर पुरी है जो समृद्ध और सुन्दर है।

-इस पुराण वर्णित सन्दर्भों से यह निश्चय है कि देविकी नदी के तट पर हेमकूट नामक किम्पुरुष क्षेत्र में ऋषि-मुनि रहते थे।

अमरकोश में-"देविकायां सरय्वाचं भवेदाविकसारवौ"

अर्थात् देविका और सरयू के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले आविक और सारव कहे जाते हैं- लिखा है। अनुमान है, इसी सारव और अवार (तट) के संयोग से सारवावार बना होगा जो उच्चारण सौविध्य से सरवार बन कर रह गया। इसी सरवार क्षेत्र के रहने वाले सरवरिया कहे जाने लगे। इस सम्बन्ध में मत्स्य पुराण का निम्न श्लोक द्रष्टव्य है :-

अयोध्यायाः दक्षिणे यस्याः सरयूतटाः पुनः। सारवावार देशोऽयं तथा गौड़ाः प्रकीर्तितः।।

अर्थात्-अयोध्या के दक्षिण सरयू नदी के तट पर सारवावार देश है। उसी प्रकार गौड़ देश भी मानना चाहिए।

आज का गोंडा जिला ही उस समय गौड़ देश कहा जाता था।

सरयू नदी कैलाश पर्वत स्थित मानसरोवर से निकल कर विहार प्रदेश में छपरा नगर के समीप नारायणी नदी में मिल गयी है।

देविका नदी गोरखपुर से लगभग ६० मील पर हिमालय से निकल कर ब्रह्मपुत्र के साथ नारायणी नदी गण्डकी में मिली है।

गण्डकी नदी का प्रवाह नैपाल की तराई से प्रारम्भ होकर समग्र सरवार क्षेत्र को सींचता हुआ छपरा जिले में गयासपुर गाँव समीप सरयू नदी में समाहित हो गया है। सरयू, घाघरा, देविका (देवहा) ये तीनों नदियाँ एक में ही मिल कर कहीं-कहीं प्रवाहित होती हैं।

देवरिया जिले में पिण्डी नंदौली ग्राम के दक्षिण भाग में सरयू नदी तीन भागों में बट गई है। इस तरह देविका (देवहा) और सरयू का पारस्परिक अन्तर्भाव होने से सरयू को देवहा भी कहा जाने लगा है।

पुराण में यह शोक मिलता है :-

यत्र सा परमा पूज्या गण्डकी भुक्ति मुक्तिदा । अपरा देविका नाम्नी गण्डक्या सह संगता।।

अर्थात्–परमपूज्या गण्डकी नदी भुक्ति-मुक्ति देने वाली है। उसके साथ दूसरी देविका नाम की नदी का संगम है।

महाभारत के अनुसार देविका, घाघरा और सरयू तीनों नदियाँ हिमालय से निकली हैं। तीनों नदियों का संगम पहाड़ पर ही हो गया था। इसीलिए सरयू को ही कहीं घाघरा तथा कहीं देविका कहा जाता

है।

पुराणों के अनुसार यही क्षेत्र ब्रह्म देश है। जहाँ पर ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई थी। यथासमय ब्रह्म देश से जो ब्राह्मण अन्य देशों में गए, वे उसे देश के नाम से अभिहित हुए। जो विन्ध्य के दक्षिण क्षेत्र में गए वे स्थानभेद से महाराष्ट्र, द्रविड़, कर्नाटक, गुर्जर ब्राह्मणों के रूप में प्रतिष्ठित हुए और जो विन्ध्य के उत्तर देशों में बसे, वे स्थानभेद के कारण सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल, मैथिल ब्राह्मणों के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

इस तरह दशविध ब्राह्मणों के प्रतिष्ठित हो जाने पर ब्रह्मदेश के निवासी ब्राह्मणों की पहचान के लिए उनकी सर्वार्य संज्ञा हो गयी। वही आगे चल कर सर्वार्य, सरवरिया, सरयूपारीण आदि कहे जाने लगे।

अतः जिन लोगों ने सरयूपारीण ब्राह्मणों को कान्यकुब्ज की शाखा आदि कहते हैं–वे भ्रान्त हैं।

स्मृतियों में पंक्ति पावन ब्राह्मणों का उल्लेख मिलता है। पंक्ति पावन ब्राह्मण सरयूपारीणों में ही होते हैं। जो आज भी पंतिहा अथवा पंक्तिपावन के रूप में विद्यमान हैं। स्मृतियों में पंक्तिपावन ब्राह्मणों के जो लक्षण कहे गए हैं वे शील सदाचार आज नहीं के बराबर है, किन्तु यह समय का दोष है। ब्राह्मणों के जो गुण वर्णित हैं वे गुण भी आज ब्राह्मणों में अप्राप्त हैं, किन्तु जैसे जन्मना ब्राह्मण होते हैं वैसे सरयूपारीण वंशानुगत पंक्तिपावन हैं।

भारतवर्ष में ऋषियों की संख्या अत्यधिक है किन्तु ४६ ऋषि ही गोत्रकार हुए हैं।

ऋषियों के शिष्य प्रवरकार माने गए। ऋषि के नाम से गोत्र उनके शिष्यों के नाम से प्रवर तथा उस ऋषि के आश्रम में जो–वेद जो शाखा आदि पढ़ाई जाती थी, वहीं वेद, उपवेद, शाखा, सूत्र उस गोत्र की मानी गयी, जो आज तक चली आ रही है।

आज सरयूपारीण ब्राह्मणों में ३, १३, १६ घर जो कहे जाते हैं उसका पौराणिक सन्दर्भ है। वेदों की रक्षा के लिए वेदों की अनेक शाखाएँ संहिताएँ जब बनीं तो सर्वप्रथम गर्ग ऋषि के आश्रम में शुक्ल यजुर्वेद के पठन-पाठन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। अतः गर्ग ऋषि प्रथम गोत्रकार बने, उनका आश्रम वेदाध्यापन का पहला आश्रम बना।

गर्ग ऋषि के बाद गौतम फिर शाण्डिल्य ऋषि के आश्रम में यजुर्वेद तथा सामवेद के अध्ययन की परम्परा प्रारम्भ हुई।

अतः ये तीन आश्रम अपने समय में पर्याप्त समादृत हुए। वे ही आश्रम अब घर बन गये और गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य तीन आश्रम प्रथम कोटि का आश्रम घर माना जाने लगा।

कुछ समय के बाद अन्य १३, ऋषियों के आश्रमों में वेदों की अन्य शाखाओं का पठन-पाठन प्रारम्भ हुआ। जो आज १३ घर (आश्रम) माने जाते हैं। उन तेरह ऋषियों का क्रम नहीं मिलता। अतः तेरह ऋषियों को एक ही श्रेणी में माना जाने लगा।

अथर्ववेद के पठन-पाठन की प्रक्रिया को उचित नहीं माना गया। आज भी अथर्ववेद प्रशस्त नहीं माना

जाता। अतः अथर्ववेद को पढ़ने-पढ़ाने वाले ऋषि गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य आदि ऋषियों की श्रेणी में नहीं आ सके।

इसी तरह धनुर्वेद आदि की शिक्षा को तत्कालीन ऋषिगण अधिक श्रेयस्कर नहीं मानते थे अतः धनुर्वेद आदि की शिक्षा-दीक्षा देने वाले ऋषिगण भी उन ऋषियों की श्रेणी में नहीं आ सके, जो आध्यात्मिक शिक्षा दे रहे थे। बस; इसी तरह तत्कालीन ऋषियों के आश्रम उच्चावंच्च की श्रेणी में आ गए। वही परम्परा आज तक चली आ रही है। समय भेद से, स्थान भेद से अर्थ भेद होता चला आ रहा है। जिसके विस्तृत विवरण के लिए समय-साधन अपेक्षित है।

सम्प्रति, यह वंशावली आपके सामने हैं, यथाशक्ति शुद्ध रखने का प्रयत्न किया है, फिर भी मानवकृति होने से त्रुटियाँ सम्भव है। अतः सुधीजन क्षमा करेंगे और अपने अमृत सुझाव प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे।

१६० बहादुरगंज

इलाहाबाद-३

वशंवद

श्रीधर शास्त्री, महामंत्री

पंडित परिषद प्रयाग

प्राप्त वंशावलियों में विरोधाभास : एक ही वंश कई गोत्रों में प्राप्त हैं

सम्प्रति ; जो वंशावलियाँ मुझे प्राप्त हैं उनमें बड़ा ही विरोधाभास है, एक ही लेखक ने एक वंश को २-२ गोत्रों में लिख दिया है, कुछ वंश ३-३ गोत्रों में लिखे हैं, उदाहरण के लिए देखेंगे :– जिनका निर्णय करना है।

१ धर्मपुर के	तिवारी	वत्स	शाण्डिल्य	वरतन्तु	११ भिटहा	मिश्र	वत्स	गौतम	
२ मणिकण्ठ	तिवारी	वशिष्ठ	,,		१२ बरई पार	,,	,,	,,	
३ धर्महरि	तिवारी	,,	वरतन्तु		१३ खैरी	ओझा	,,	उपमन्यु	
४ गुरौली के	तिवारी	शाण्डिल्य	भार्गव		१४ रजौली	ओझा	,,	कश्यप	
५ गजपुरिहा		,,	,,		१५ ककुआ	ओझा	उपमन्यु	कश्यप	वत्स
६ चौमुखा		,,	,,		१६ भरसांड़	उपाध्याय	भरद्वाज	कश्यप	
७ रखुवाखोर		,,	,,		१७ कुशौरा	चौबे	कश्यप	कात्यायन	
८ धुरयापार		,,	,,		१८ विजोरा	पाठक	कश्यप	भारद्वाज	
९ महाबन	मिश्र	वत्स	गौतम		१९ जलालपुर	दुबे	भारद्वाज	गौतम	
१० रतनमाला	मिश्र	,,	,,		२० रजहटा	दुबे	,,	,,	

२१ लठियाई	दुबे	गर्ग	गौतम		२७ तिलौरा	दुबे	कण्व	कश्यप	
२२ नीवी	दुबे	गार्ग्य	भारद्वाज		२८ इन्द्रपुर	पाण्डे	सावर्ण्य	वत्स	
२३ झंझवा	दुबे	गार्ग्य	,,		२९ फरेंदा	,,	,,	कश्यप	
२४ वढ़यापार	दुबे	गौतम	,,		३० जगदीशपुर	,,	कश्यप	वत्स	
२५ पटवरिया	दुबे	कृष्णात्रि	,,		३१ इटिया	,,	गर्ग	गार्ग्य	
२६ अमवा	दुबे	गर्ग	गार्गेय						

- इस तरह आप देखेंगे एक वंशज २-२ गोत्रों में लिखे हैं, इनका वास्तविक गोत्र कौन-सा है–इसकी खोज यथा शक्ति मैंने की है और इस गोत्रावली में वही लिखा है, फिर भी कुछ वंशजों का निर्णय अभी तक नहीं हो सका है, प्रयत्न जारी है।

●

प्राप्त वंशावलियों में विरोधाभास : पंक्ति-अपंक्ति का विभेद

- कुछ वंशावली लेखकों ने निम्न वंशों को पंक्ति में लिखा है, कुछ ने अपंक्ति में (पंक्ति में नहीं) लिखा है, (इसका निर्णय मैं अभी नहीं कर सका हूँ कि इनकी पंक्ति अभी तक है या नहीं)

१. शाण्डिल्य गोत्र	तिवारी	खर्दहा, गोपीकन्ध, मंगरा, घोडनर, पिपरी, डिमहा के तिवारी, वसावनपुर, उनवलिया
२. गौतम गोत्र	मिश्र	गोपालपुर
३. कश्यप गोत्र	दुबे	गौरा
४. भरद्वाज गोत्र	दुबे	मानघाटी
५. कश्यप गोत्र	पाण्डेय	त्रिफला
६. वत्स गोत्र	पाण्डेय	नागचौरी, वनहा, सोनफेरवा, परसिया, वेलवा, विलौंजा
७. गर्ग गोत्र	पाण्डेय	इटिया
८. गौतम गोत्र	पाण्डेय	भटगवां
९. गार्ग्य गोत्र	पाण्डेय	ठोकवा पाण्डेय
१०. गर्ग गोत्र	शुक्ल	छीछापार

॥ सरयूपारीण ब्राह्मणों में प्राप्त गोत्र ॥

एक मत–

१. गर्ग	२. गौतम	३. शाण्डिल्य.	४. परासर
५. सावर्ण्य	६. कश्यप	७. भारद्वाज	८. कौशिक
९. भार्गव	१०. वत्स	११. कात्यायन	१२. सांकृत
१३. अत्रि	१४. गालव	१५. अंगिरा	१६. जमदग्नि

दूसरा मत–

१. गर्ग	२. गौतम	३. शाण्डिल्य	४. परासर
५. सावर्ण्य	६. कश्यप	७. भारद्वाज	८. कौशिक
९. भार्गव	१०. वत्स	११. कात्यायन	१२. सांकृत
१३. वशिष्ठ	१४. गर्दभीमुख	१५. अगस्त्य	१६. भृगु
१७. घृत कौशिक	१८. गार्ग्य	१९. कौडिन्य	२०. उपमन्यु

- प्रथम मत के अन्तिम ४ (१ अत्रि, २ गालव, ३ अंगिरा, ४ जमदग्नि)–दूसरे में नहीं है।

- दूसरे मत के अन्तिम ८ (१ वशिष्ठ, २ गर्दभीमुख, ३ अगस्त्य, ४ भृगु, ५ घृत कौशिक, ६ गार्ग्य, ७ कौडिन्य, ८ उपमन्यु) = प्रथम में नहीं है।
- प्रथम तथा द्वितीय मत में १ से १२ तक एक समान है।
- प्रथम मत में ४ बढ़े हैं
- द्वितीय मत में ८ बढ़े हैं

कुल—२४ ऋषि हैं

- गर्दभीमुख शाण्डिल्य गोत्र के अन्तर्गत है।
- १. चान्द्रायण, २. वरतन्तु, ३. मौनस, ४. कण्व, ५, उद्वाह—ये गोत्र सरयूपारीणों में अतिरिक्त प्राप्त है। इस तरह कुल २९ गोत्र मिलते हैं।

●

॥ इस वंशावली में वर्णित गोत्र ॥

१. गर्ग	१०. कृष्णात्रि या अत्रि	१९. कौडिन्य
२. गार्ग्य या गार्गीय	११. अगस्त्य	२०. घृतकौशिक
३. गार्गेय	१२. कात्यायन	२१. कुशिक
४. गौतम	१३. चान्द्रायण	२२. कौशिक
५. शाण्डिल्य	१४. सांकृत	२३. वरतन्तु
६. परासर	१५. सावर्ण्य/सावर्णि	२४. कण्व
७. भारद्वाज	१६. भार्गव	२५. मौनस
८. कश्यप	१७. उपमन्यु	२६. उद्वाह
९. वत्स	१८. वशिष्ठ	२७. भृगु

नोट—१. जमदग्नि, २. अंगिरा, ३. गालव—गोत्र के वंशज अभी तक मुझे नहीं मिले हैं।

॥ गोत्र में प्राप्त वंश ॥

किस गोत्र में क़ौन-कौन से वंश प्राप्त हैं, एक दृष्टि में :–

गोत्र में		प्राप्त वंश									
१	गर्ग	शुक्ल	तिवारी								
२	गौतम	मिश्र	दुबे	पाँडे	उपाध्याय						
३	शाण्डिल्य	मिश्र	तिवारी	कीलपुर के दीक्षित							
४	पराशर	पाँडे	शुक्ल	उपाध्याय							
५	भारद्वाज	पाँडे	दुबे	पाठक	चौबे	मिश्र	तिवारी	उपाध्याय			
६	कश्यप	पाँडे	दुबे	चौबे	पाठक	ओझा	मिश्र	उपाध्याय	तिवारी	शुक्ल	
७	कृष्णात्रि	दुबे	शुक्ल								
८	वत्स	पांडे	दुबे	मिश्र	तिवारी	ओझा	उपाध्याय				
९	अगस्त्य	तिवारी									
१०	कात्यायन	चौबे									
११	सौंकृत	पांडे	चौबे	तिवारी							

१२	सावर्ण्य	पांडे	मिश्र	
१३	भार्गव	तिवारी		
१४	उपमन्यु	ओझा	पाठक	
१५	वशिष्ठ	मिश्र	चौबे	तिवारी
१६	कौडिन्य	मिश्र	शुक्ल	

१७	घृतकौशिक	मिश्र	
१८	कुशिक	चौबे	
१९	कौशिक	दुबे	मिश्र
२०	चान्द्रायण	पांडे	
२१	वरतन्तु	तिवारी	

॥ कौन वंश किन-किन गोत्रों में प्राप्त हैं, एक दृष्टि में ॥

● शुक्ल वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. गर्ग
२. कौडिन्य
३. कृष्णात्रि
४. कश्यप
५. पराशर

● चतुर्वेदी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. कात्यायन
२. सावर्ण्य
३. भारद्वाज
४. कश्यप
५. कुशिक
६. वशिष्ठ

- **तिवारी वंश या त्रिपाठी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. शाण्डिल्य	२. कश्यप
३. भार्गव	४. गौतम
५. गर्ग	६. पराशर
७. वशिष्ठ	८. भारद्वाज
९. वरतन्तु	१०. सांकृत
११. कौशिक	१२. उदवाह
१३. भृगु	१४. सावर्ण्य
१५. वत्स	१६. कौडिन्य

- **मिश्र वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. गौतम	२. वत्स
३. वशिष्ठ	४. भारद्वाज
५. कौडिन्य	६. पराशर
७. कौशिक	८. घृत कौशिक
९. कश्यप	१०. सावर्ण्य

- **पाण्डेय वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. सावर्ण्य	२. कश्यप
३. वत्स	४. सांकृत
५. अगस्त	६. गर्ग
७. पराशर	८. वशिष्ठ
९. गौतम	१०. भारद्वाज
११. कौशिक	१२. गार्ग्य

- **दुबे या द्विवेदी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. कृष्णात्रि	२. भारद्वाज
३. गार्गेय	४. कश्यप
५. मौनस	६. कण्व
७. वत्स	८. गौतम

- **ओझा वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. उपमन्यु २. कश्यप ३. गार्गेय

- **पाठक वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. कश्यप २. उपमन्यु
३. भारद्वाज

- **दीक्षित वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. शाण्डिल्य

- **पाठक वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :-**

१. भारद्वाज २. पराशर
३. वत्स

●●●

॥ १ ॥ गर्ग गोत्र ॥

१. गोत्र – गर्ग २. वेद – यजुर्वेद ३. उपवेद – धनुर्वेद
६. शिखा – दाहिन ७. पाद – दाहिन ४. शाखा – माध्यन्दिनी
५. सूत्र – कात्यायन ८. देवता – शिव ९. प्रवर पंच (पांच)
१. आंगिरस २. वार्हस्पत्य ३. भारद्वाज ४.शैन्य ५. गार्ग्य

- **गर्ग गोत्र में निम्नलिखित वंश प्राप्त हैं :–**

१. शुक्ल २. तिवारी ३. भारद्वाज

॥ शुक्ल वंश ॥

- **गर्ग गोत्र में मुख्यतः शुक्ल वंश होता है।**
- **शुक्ल वंश का आदि स्थान भेड़ी है, जिनकी पंक्ति सुरक्षित है।**
- **यथासमय शुक्ल वंश के निम्न स्थान बने :–**

१. **जिनकी पंक्ति है :–**१. मामखोर २. वकरुआ ३. महसों ४. लखनौरा
२. **जिनकी पक्ति नहीं है :–**१. करंजही २. कनइल ३. मझगवां ४. वहेरी ५. बहरुचिया

- **आगे चलकर स्थान भेद से निम्नलिखित शुक्ल वंश प्रसिद्ध हुए :–**

१. **मामखोर में :–**

(क) **जिनकी पंक्ति है** – १. मामखोर २. खखाइज खोर ३. भेड़ी ४. वकरुआ ५. रूदाइन

(ख) **जिनकी पंक्ति टूट गई**– १. बरहुचिया २. सीपर ३. सरांव ४. छोटका सरांव ५. कनइल ६. भंटोली ७. बहेरी तलहा

२. **महसों में :–**

(क) **जिनकी पंक्ति है** – १. कटारि २. झौवा ३. रुद्रपुर ४. मेहरा ५. सिलहटा

(ख) **जिनकी पंक्ति नहीं है**– १. मुंडेरा २. बकैना ३. बसौढ़ी ४. खोरि पकारि ५. गोपालपुर ६. अकौलिया

● **लखनौरा में :–**

जिनकी पंक्ति है – १. भेलरवा

जिनकी पंक्ति नहीं है –

१. तुरकहिया	२. कसैला	३. हटवा
४. आमचौरा	५. वाईखोर	६. लोहलौरी
७. जिगिना	८. जिगनी	९. सिटकिहा
१०. झरकटिया	११. चिनगहिया	१२. भादी
१३. छोटकी भादी	१४. हथरसा	१५. नवागांव
१६. पैड़ी	१७. गौबरहिया	

● **महुलियार में :–**

जिनकी पंक्ति है – १. छीछापार

जिनकी पंक्ति नहीं है –

१. बरहट	२. मुड़फेकरा	३. नगरा
४. गौरा	५. दीक्षापार	६. जरहरिया
७. सिपरापार	८. बनगांई	९. ठांठर
१०. फकरही	११. मलेन्द	१२. हरदहा

● **॥ गर्ग गोत्र में ॥ :–निम्नलिखित 'शुक्ल भी होते हैं :–**

(क) जिनकी पंक्ति है : –

१. एकला	२. ढढ़ोआ	३. थरौली	४. छितुआ
५. गंगोली	६. घोरहटा	७. छितहा	८. छिवरा
९. वय पोखरि	१०. वभनी	११. वसौढ़ीं	१२. वनगवां
१३. बेवा	१४. भरौलिया	१५. सरदहा	
१६. अमचोना	१७. सिरसा	१८. मुडेरी	

(ख) जिनकी पंक्ति नहीं है : –

१. अजनौरा	२. अकोहरिया	३. उचहरिया	४. उमरहर
५. ककनाही	६. कुर्मौल	७. कोलूआ	८. धरहट
९. तुरकौलिया	१०. गढ़	११. गौर	१२. छिलहर
१३. चांदागढ़	१४. जिनुआ	१५. जंजन	१६. वड़हर
१७. वहिडा	१८. वागापार	१९. वांसपार	२०. विलौड़ी
२१. विहरा	२२. बुड़हरी	२३. भेखनौरा	२४. भादी
२५. पिपरा	२६. वलवा	२७. वनगई	२८. भेलौंजी
२९. मगहरिया	३०. मटिऔरा	३१. मलेन	३२. महुली

● **गर्ग गोत्र में शुक्ल जिनकी पंक्ति नहीं है : –**

३३. महुलियार ३४. महरिहा ३५. मुंडा ३६. रामनगर
३७. लखनखोरी ३८. सथरी ३९. वेलौड़ी ४०. वेल पोखरि
४१. सिपरापार ४२. सुकुलपुरी

टिप्पणी :–गर्ग गोत्र में–निम्न शुक्ल वंश पाए जाते हैं, इनकी पंक्ति नहीं है :–

१. असौंजा २. नगरहा ३. शुक्लपुरा

इन्हें समाज "जोरहरी" कहता है।

॥ २ ॥ तिवारी वंश ॥

● **गर्ग गोत्र में तिवारी वंश भी होते हैं :–**

(क) जिनकी पंक्ति नहीं है :– विष्णुपुर के तिवारी

(ख) जिनकी पंक्ति है :– इटिया के तिवारी

॥ २ ॥ गार्ग्य गोत्र ॥ (कुछ लोग ● गार्ग्य गोत्र को ही "गार्गीय गोत्र" भी कहते हैं।)

या

॥ गार्गीय गोत्र ॥ (कुछ लोग ● गार्गेय गोत्र को ही "गार्ग्य गोत्र" भी कहते हैं।)

● इस "गार्ग्य गोत्र" का = वेद – उपवेद आदि सब वही है, जो गर्ग गोत्र का है।
(यह गोत्र – गर्ग गोत्र के भीतर ही माना जाता है।)

● इस गोत्र में :–ठोकवा के पांडे = होते हैं, जिनका आदि स्थान "हटिया" है।
–"ठोकवा के पांडे" की पंक्ति विवादित है,
कुछ लोग पंक्ति में मानते हैं, कुछ पंक्ति में नहीं मानते।

● इसी गोत्र में :–"गुड़े गाँव के पांडे" भी पाए जाते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

●●●

॥ ३ ॥ गार्गेय गोत्र ॥ "गार्गेय गोत्र" का = वेद – उपवेद वहीं है जो गर्ग गोत्र का है।

- इस गोत्र में :–"द्विवेदी" वंश के लोग होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।
- इस गोत्र के "द्विवेदी" वंश का मुख्य स्थान निम्न है :–इनकी पंक्ति नहीं है।

१. कोड़हार–कोडवरिया, २. महुलिया,
३. पोइला, ४. भींटी ४. परौहा

- इस गोत्र में कुछ अन्य स्थानों के भी द्विवेदी पाए जाते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. मझंवा २. वघोर, ३. खुर्दहा, (खुर्द, महुलिया)
४. चोकड़ी, ५. अमवां ६. कांटा,
७. कठकुआं, ८. कोड़रिया, ९. लड़िआई।

टिप्पणी–लड़िआई और लठियाही–दो वंश द्विवेदी के होते हैं, लड़िआई का गर्ग गोत्र है, लठियाई का गौतम गोत्र है, दोनों को अलग-अलग समझना चाहिए।

॥ ४ ॥ गौतम गोत्र ॥

१. गोत्र – गौतम २. वेद – यजुर्वेद, ३. उपवेद – धनुर्वेद
४. शिखा – दाहिन ५. शाखा – माध्यन्दिन ६. पाद – दाहिन
७. देवता – शिव ८. सूत्र – कात्यायान ९. प्रवर – त्रि (तीन)
१. आंगिरस, २. गौतम, ३. वार्हस्पत्य या औतथ्य

- इस गोत्र में : १. मिश्र २. द्विवेदी = दो वंश होते हैं।
- दो घर पांडे के भी होते हैं।

१. मिश्र वंश–मिश्र वंश का आदि स्थान "ब-इसी" कहा जाता है, जिसे अब "बेइसी या वेसी कहते हैं।

- आगे चलकर मिश्र वंश निम्न स्थान में गए :–

१. जिनकी पंक्ति है : –

१. मधुबनी २. भरसा (भरसी) ३. भभया ४. जिगना

२. जिनकी पंक्ति नहीं है : –

१. कारीडीह २. भटियारी ३. पिपरा ४. वाऊडीह
५. रापतपुर

● **यथा समय गौतम गोत्रीय मिश्र वंश के निम्न स्थान भी बने :–**

(क) जिनकी पंक्ति है : –

१. कारी गांव	२. गोपालपुर	३. बस्ती	४. वरइपार या वरईपुर
५. महुई	६. रतनपुर	७. मिजौलिया	८. मठिया
९. मधुवनी	१०. सिंहपुर	११. भरसी	१२. सेंदुरिया
१३. डुबराव	१४. भार्गव	१५. चचाई	१६. चम्पारन
१७. चौमुआ	१८. चौमुखा	१९. भरौलिया	२०. वांसगांव
२१. चकदहा	२२. चकौड़ा	२३. चारडीह	२४. जिगिना
२५. डुमरी	२६. नरईपुर या नरईपट्टी		२७. पतिलाड़
२८. व्यहसी	२९. अलेहा	३०. खदरा	३१. हत्यरवा
३२. भभया	३३. खरगपुर	३४. रठेड़ा	३५. कपिशा
३६. फरिगैयां	३७. फरगैयां		

(ख) जिनकी पंक्ति नहीं है। :–

१. अखर चंदा	२. कटगैयां	३. कविशा	४. कपाल गौतम
५. कारीडीह	६. कोटवा	७. खरगगांव या खरडर गांव	
८. गैती	९. गोईड़ौरा	१०. गौतम	११. पड़रहा

१२. पिपरा	१३. फरिआ	१४. वसन्तपुर	१५. महावन
१६. रामपुर	१७. अजयासी या भजयासी या भजयाइसी		
१८. भिटहा	१९. भैरोपुर	२०. मटियारी	२१. सोनाखार
२२. हथियाखार	२३. डोलिहा	२४. कुशहर	२५. चतुरी
२६. चड़रहा	२७. तिलकपुर	२८. दियावाती	२९. गरियैयां
३०. धोतीगांव	३१. पिड़िया	३२. वाऊडीह	३३. बालेडीहा
३४. ब्रह्मपुर	३५. रापतपुर	३६. फरिएआ	

● **मधुबनी–वांसगांव एक ही वंशज हैं, अतः वांसगांव के मधुबनी कहे जाते हैं।**

● **भार्गव तिवारी अलग होते हैं, जिनका शाण्डिल्य गोत्र है।**

● **महावन मिश्र को किसी एक ने वत्स गोत्र में भी लिखा है, जो गलत है, इनका गौतम गोत्र ही है।**

|| गौतम गोत्र में पांडे ||

● इस गोत्र में निम्नलिखित पांडे भी होते हैं :–

१. बुढ़परिया (पंक्ति नहीं है)   २. भटगवां (पंक्ति है)

॥ गौतम गोत्र में द्विवेदी ॥

- इस गोत्र में "द्विवेदी" भी होते हैं, जिनका मुख्य स्थान इस प्रकार है :–
- **इन द्विवेदी वंशजों की पंक्ति नहीं है : –.**

१. बरपार   २. सहुआ   ३. गोपालपुर   ४. गड़री
५. रजहटा   ६. कांचनी   ७. गुर्दवान   ८. धनौली
१०. लठिआही   ११. बढ़यापार

- **परिवर्तित काल में गौतम गोत्र में निम्नलिखित द्विवेदी या दुबे वंशज हो गए :–**
- जिनकी पंक्ति है :–बढ़यापार।
- जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. कंचनिया   २. खरखदिया   ३. गुर्दवान
३. तिंवती   ५. तिलसरा   ६. रुपहलिया

- **गौतम गोत्र में :–सुरसती उपाध्याय भी होते हैं जिनकी पंक्ति नहीं है।**

टिप्पणी – इलाहाबाद में नारी-वारी के पास हरखपुरा मिसिर के कई घर हैं जो अपना गौतम गोत्र बताते हैं।

॥ ४ ॥ शाण्डिल्य गोत्र ॥

१. गोत्र-शाण्डिल्य   २. वेद-सामवेद   ३. उपवेद-गन्धर्व
४. शाखा-कौथुमी   ५. पाद-वाम   ६. शिखा-वाम
७. देवता-शिव   ८. सूत्र-गोझिल   ९. प्रवर-त्रि (तीन)

- श्रीमुख का—१. कश्यप   २. असित   ३. शाण्डिल्य
- गर्दमुख —१. कश्यप   २. असित   ३. दैवल

- **इस गोत्र में – १. तिवारी २. मिश्र ३. दीक्षित = वंश होते हैं।**
- शाण्डिल्य गोत्र में मुख्यतः तिवारी या त्रिपाठी होते हैं।
- त्रिपाठी वंश के २ भेद हैं :–१. श्रीमुख २. गर्द मुख या गर्ध मुख
  (कुछ लोग गर्दमुख को ही गर्दभ मुख या गर्दभी मुख कहते हैं)
- **शाण्डिल्य गोत्र में कौलपुर के दीक्षित भी होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।**
- **शाण्डिल्य गोत्र में निम्नलिखित 'मिश्र वंश' भी होते हैं जिनकी पंक्ति नहीं है :–**

१. जिरासों   २. लाल मनि   ३. पिपरा   ४. पड़रहा कान्तित

नोट-- पिपरा मिश्र मुख्यत: गौतम गोत्र में होते हैं, किन्तु कुछ पिपरा वंश के मिश्र अपना गोत्र शाण्डिल्य कहते हैं।

त्रिपाठी वंश

१. श्रीमुख त्रिपाठी वंश के मुख्य स्थान निम्न हैं :–

- **जिनकी पंक्ति है :–**

  १. सरया २. सोहगौरा ३. झुरिया ४. देवरवा ५. वलुआ
  ६. सिरजम ७. धानी ८. सुपरी ९. चेतिया १०. परतावल

- **आगे चलकर श्रीमुख त्रिपाठी चार उपनामों से विख्यात हुए थे :–**

  १. राम २. कृष्ण ३. मणि ४. नाथ

किम्वतन्ती ● ऐसी किम्वदन्ती है, श्रीमुख त्रिपाठी वंश में श्री गोरखनाथ त्रिपाठी नामक एक ब्रह्म वर्चस्वी महापुरुष के चार पुत्र थे, जिनके नाम क्रमश: थे :–

१. राम २. कृष्ण ३. मणि ४. नाथ

- कालान्तर में ये चारों स्थानों में चले गए, जिनके वंशज यथासमय विस्तृत होते गए।
- अपनी पहचान बनाए रखने के लिए यथासमय विस्तृत वंशजों ने अपने नाम के साथ अपने-अपने पूर्वज राम, कृष्ण, मणि, नाथ–उपनाम लगाने लगे, जो परम्परा आज भी चली आ रही है।

- इन राम-कृष्ण-मणि-नाथ चारों में ऐसे भी त्रिपाठी वंश हैं, जो उपनाम नहीं लगाते।

१. **राम के वंशजों का मुख्य स्थान :–**

- जिनकी पंक्ति है – १. सरया २. सोहगौरा ३. झुरिया
- जिनकी पंक्ति नहीं है– १. उनवलिया २. अतरौली ३. रुद्रपुर
  ४. बहुआरी ५. भरुहिया ६. कोठा
  ७. वदरा ११. मऊ १२. पहला
  १३. तुसली १४. भलुआनी

२. **कृष्ण के वंशजों के मुख्य स्थान :–**

- इनकी पंक्ति नहीं है :–१. वारीपुर २. वसावनपुर ३. वुटिहा ४. वंसडिला
- कृष्ण के वंशजों में किसी की पंक्ति नहीं रह गई है।

३. **नाथ वंशजों के मुख्य स्थान :–**

- जिनकी पंक्ति है – १. चेतिया २. परतावल
- जिनकी पंक्ति नहीं है – १. भिलौनी २. निगुहिया

४. **मणि के वंशजों के मुख्य स्थान :–**

● जिनकी पंक्ति है :–

१. देवरवा २. धानी ३. हरदी ४. वलुआ

५. सिरजम ६. सुपरी ७. सोनौरा

● जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. पचरुखिया २. कुठौली ३. सिसवा ४. लेदवा

५. वटिया वारी ६. तलिवावाद ७. वंधना ८. सेमरीरथ वर्ग

९. देवरिया १०. वरपार ११. उधवपुर १२. हथिया परास

१३. यमुना १४. कपरगढ़ १५. गुरौली

गर्दभ मुख या गर्दभी मुख

● गर्द मुख त्रिपाठी वंशजों का मुख्य स्थान नदौली है, किन्तु नंदौली तिवारी वंशजों की पंक्ति टूट चुकी है, आगे चलकर नंदौली के तिवारियों के निम्न प्रकार हो गए। उनकी पंक्ति बनी हुई है।

१. कटियारी २. टाणा ३. मुंजौना (पक्ति विवादित)

४. मंगराइच ५. सोनापार ६. संवेजी

● **शाण्डिल्य गोत्र के अन्य तिवारी :–**इसी गोत्र में तिवारी वंशजों के कुछ अन्य स्थान भी पाए जाते हैं –

जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. खोरमा २. गोनौरा ३. नेवास ४. नकौझा

५. बुढ़ियावारी ६. धतुरा ७. पाला ८. सेमरी

९. चौरी १०. गुरौली

जिनकी पंक्ति विवादित है :–

शाडिल्य गोत्र में निम्नलिखित तिवारी वंशज भी प्राप्त हैं, जिनकी पंक्ति विवादित है, कुछ लोग इन्हें पंतिहा मानते हैं कुछ लोग पंक्ति में नहीं मानते हैं; इनके नाम हैं :

१. खर्दहा २. गोपीकन्ध ३. मंगेरा

४. घोड़नर ५. डिमहा के तिवारी

- सब मिलाकर शाण्डिल्य गोत्र में निम्नलिखित तिवारी होते हैं :–

जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. चन्दरौटा	२. छितौनी	३. चेतिया	४. टांडा
५. देवरवा	६. धानी	७. परसार	८. परतावल
९. वसन्तपुरा	१०. वसडाला	११. झुरिया-झुड़िया	१२. डीरीडीहा
१३. धर्मपुर	१४. पीपर पाती (पिपांती)		१५. उनवलिया
१६. कटवन	१७. कपालगढ़	१८. चौका	१९. चौधरी पट्टी
२०. वलुआ	२१. मकदूमपुर	२२. सरया	२३. सिरजम
२४. वसावनपुर	२५. मदनपुर	२६. विनवलिया	२७. सोनौरा
२८. पाला	२९. सोहगौरा	३०. बूढ़ीवारी	३१. रुद्रपुर
३२. मंगराइच	३३. साहरना	३४. भरुहिया	३५. लोनापार
३६. लोनाखार	३७. पीड़ी	३८. सुपरी	३९. भाटे

४०. मुंजौना की पंक्ति विवादित

जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. अगोरी २. भरुहिया ३. कसिहारी ४. कुकुरगड़िया ५. कौहली

५. गुरम्ही	६. गोंगिया	७. गोण्डलिया	८. चरथरी
९. चिउटहा	१०. अतरौली	११. उक्रिना	१२. कलानी
१३. कटियारी	१४. कांधापार	१५. कोठा या कोठी	१६. कौहिला
१७. खोरमा	१८. गोरखपुरिया	१९. चौरिहा	२०. चौंसा
२१. छपरा	२२. जोगिया	२३. झकही	२४. तिवारीपुर
२५. वेसापार	२६. देवा	२७. निदिया	
२८. नैवास छोटा बड़ा		२९. नैयापार	३०. वदरा
३१. डेहरा समार्जनी		३२. दुर्गौलिया	३३. धतुरा
३४. डाइनवारी	३५. तलिवावाद	३६. विनवलिया	३७. नदौली
३८. निर्मोहिया	३९. नैनसार	४०. नौसड़िया	४१. परसौनी
४२. पहिला	४३. वांसगांव	४४. भरवलिया	४५. भार्गव
४६. भांटी	४७. भैंसहा	४८. मणिकण्ठ	४९. रणौली
५०. सितिया	५१. वेदुआ	५२. भठवा	५३. भरमहा
५४. भाटपार	५५. भिरहाभाटी	५६. भौआपार	५७. महुलावर

५८. रखुवाखोर ५९. रुहटा ६०. लखनापार ६१. सिसवा
६२. सेमरीरथ वर्ग ६३. सोनाई ६४. सोढ़ाचक्र
६५. शंकराचार्य दुर्गौलिया ६६. गजपुरिहा ६७. सेंवई
६८. धुरियापार ६९. सोनहुला ७०. सौरेजी ७१. शेकनहां
७२. चौमुखा

॥ ९ ॥ पराशर गोत्र ॥

१. गोत्र – पराशर २. वेद – यजुर्वेद ३. सूत्र – कात्यायन
४. उपवेद – धनुर्वेद ५. शिखा – दाहिन ६. शाखा – माध्यान्दिनी
७. पाद – दाहिन ८. देवता – शिव ९. प्रवर – त्रि (तीन)
१. वशिष्ठ २. शाक्त्य ६. पाराशर्य अथवा – वशिष्ठ शक्ति, पराशर

- **इस गोत्र में :– १. पाण्डेय २. शुक्ल ३. उपाध्याय होते हैं।**
- इन तीनों वंशों में जिनकी पंक्ति है, उनके आगे पंक्ति लिख दिया है, शेष की पंक्ति नहीं है।

- इनका आदि स्थान हस्तग्राम था।
- परिवर्तित काल में निम्न स्थान हो गए।

१. पांडे का स्थान :– १. सिलासत २. वामपुरा ३. तुर्यापार ४. धमौली ५. सोहनपार ६. सिला

२. उपाध्याय के स्थान :– १. धनैती २. नदुआ (चौखरी)

३. शुक्ल वंश के स्थान :– १. परसा (पंक्ति) २. बूढ़ा परहंसा कान्तित ३. नगवा (वरौचा) ४. नगरहा ५. परसाडीह (पंक्ति) ६. परिगवा (पंक्ति) ७. पिकौरा ८. नेवारी

- इस गोत्र में निम्नलिखित मिश्र वंश भी होते हैं :–

१. मिसिरमऊ २. धौरहा

॥ ७ ॥ भारद्वाज गोत्र ॥

१. वेद – यजुर्वेद   २. उपवेद – धनुर्वेद   ३. शिखा – दाहिन
४. शाखा – माध्यान्दिनी   ५. पाद – दाहिन   ६. देवता – शिव
७. सूत्र – कात्यायन   ८. प्रवर – त्रि (तीन)
१. आंगिरस   २. वार्हस्पत्य   ३. भारद्वाज

- इस भारद्वाज गोत्र में निम्नलिखित वंश के ब्राह्मण होते हैं :–

१. दुबे   २. पांडे   ३. चौबे   ४. पाठक   ५. उपाध्याय   ६. मिश्र   ७. तिवारी

१. दुबे (द्विवेदी) का स्थान :– जिनकी पंक्ति पाई जाती है :–

१. वृहद् ग्राम (वड़गों)   २. शरारि   ३. वढैया   ४. धाराधरी
५. रमवापुर   ६. मझौवा   ७. जलालपुर   ८. रमलपुर
९. वड़गइयां   १०. पटवरिया   ११. कुंडवलिया   १२. नकाही
१३. सौरी   १४. सेंधवा   १५. वेलवा   १६. टंटनवापुर
१७. गुदभापुर   १८. पारा   १९. वरइ पट्टी   २०. सेजरुआ
२१. वड़हरा   २२. उचेला   २३. छपहा   २४. विनवेदी वाले

दुबे वंश जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. कुंचेला   २. केरहहा   ३. नीवी   ४. पडरिहा
५. पुछेला   ६. मीठावेल   ७. मरसड़ा   ८. महुलिया
९. मुड़हा   १०. मानपट्टी   ११. समारी   १२. संझवा
१३. हडगही   १४. सौरार-सावर्ण्य   १५. वेलौरा

२. पांडे वंशजों के मुख्य स्थान :–पंक्ति नहीं है।

१. सिसवा   २. पुरैना   ३. कौसड़ (मचैया के अन्तर्गत)
४. वलुआ   ५. बाबू मठियारी   ६. वड़गो (जो अर्धुज कहे जाते हैं)
७. सोनौरा   ८. मसोड़   ९. लखनापार   १०. पिपरा गौतम

३. चौबे वंशजों के मुख्य स्थान :–पंक्ति नहीं है

१. वलुआ   २. मलौली   ३. वूवा   ४. दुनघटा

४. पाठक वंशों के मुख्य स्थान :–

१. सोनौरा   २. देउआपार   ३. विजौरा   ४. गोपालपुर

५. मैंसोना ६. मसोढ़ ७. चापतारा ८. रहटौली
९. सोनामसोढ़ १०. हुरवा ११. पातलुखा १२. देवगांव

५. उपाध्याय वंशजों के मुख्य स्थान :– पंक्ति नहीं है।

१. खोरिया २. हरैया ३. लखिमा ४. राईमऊ
५. मौनिछ ६. जौतिहा ७. दुधौरा ८. दहेंग
९. खिरहुआ १०. खौंखरिया ११. पापर डांड १२. गजपुरिहा
१३. गौर १४. चिकनिया १५. तोसवा १६. नयपुरा
१७. पकड़ी १८. पड़ैया डांडा १९. पीपर डीहा २०. वरौली
२१. विष्णुपुर २२. भड़सार २३. मसौली २४. रुद्रपुर
२५. लमकुश २६. हड़गडी

६. मिश्र वंशजों के मुख्य स्थान :– पंक्ति नहीं है।

१. भौंरहा २. मझरिया (पंक्ति) ३. गजपुरिहा ४. गौर

७. तिवारी वंशज का स्थान :–

१. खमरौनी

॥ ८ ॥ कश्यप गोत्र ॥

१. वेद – सामवेद २. उपवेद – गन्धर्व ३. शिखा – वाम
४. शाखा – कौथुमी ५. पाद – वाम ६. देवता – विष्णु
७. सूत्र – गोभिल ८. प्रवर – त्रि (तीन)
१. काश्यप २. आसित ३. दैवल

- **कश्यप गोत्र में निम्नलिखित ब्राह्मण होते हैं :–**

१. पांडे २. दुबे ३. चौबे ४. उपाध्याय
५. मिश्र ६. ओझा ७. पाठक ८. तिवारी ९. शुक्ल

- इन वंशजों के मुख्य स्थान क्रमशः निम्न प्रकार से हैं :–

१. ● **पांडेय** :–१. त्रिफला २. वनगैंया ३. फरेंदा ४. जगदीशपुर
५. नाथपुर ६. विसनैया ७. गौरा ८. नदुला (पंक्ति)
९. अधुर्य १०. आसापूरी ११. खटवा १२. वारहगांव
१३. वारह कोनी (पंक्ति) १४. वामपुर

२. ● दुबे :– १. कांचनी (परवा कान्तित) २. तिलौरा ३. गौरा (पंक्ति) ४. वत्सपार ५. ब्रह्मचारी ६. सिंगोला

३. ● चौबे :– १. सोनवर्सा २. विशुनपुर (नैपुरा कान्तित)

४. ● उपाध्याय :– १. पकड़ी २. वरौली ३. भरसांड़

५. ● मिश्र :– १. राड़ी/राल्ही २. मिसरौलिया ३. रमौली ४. परमेश्वरपुर

६. ● ओझा :– १. निपनिया २. विनुआटींकर ३. भैसढ़िया ४. रजौली

७. ● पाठक :– १. खरहटिया २. विजोरा

८. ● तिवारी:– १. मसोढ़ २. भसौली ३. हड़गही ४. कोल्हुआ

९. ● शुक्ल :–कश्यप गोत्र में निम्नलिखित शुक्ल भी होते हैं :–

१. सुकरौटी २. सुकुरौली ३. सुरदापार (पंक्ति है) ४. सेखुई

॥ ९ ॥ वत्स गोत्र ॥

१. गोत्र – वत्स २. वेद – सामवेद ३. उपवेद – गन्धर्व ४. शिखा – वाम

५. शाखा – कौथुमी ६. पाद – वाम ७. देवता – शिव ८. सूत्र – गोभिल

९. प्रवर – पंच (पांच)

१. भार्गव २. च्यवन ३. आप्नवान ४. और्व ५. जामदग्न्य

● वत्स गोत्र में निम्न वंश के ब्राह्मण होते हैं :–

१. पांडे २. दुबे ३. मिश्र ४. तिवारी ५. ओझा ६. उपाध्याय

१. पांडे वंश

● वत्स गोत्र में निम्नलिखित पांडे वंश प्राप्त हैं :–

(क) जिनकी पंक्ति है :–

१. वेलवा २. नंदुला ३. सोनफेरवा

४. वनहा ५. परसिया ६. विलौजा

(ख) जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. इन्द्रपुर २. जगदीशपुर ३. इमलडीह ४. तुलापुर

५. वनहई ६. विष्टवल ७. नाथपुर त्रिपला ८. वांसपार

९. तुकौलिया १०. नागचौरी ११. समकेरवा १२. विछौनेथा

१३. मछरिया १४. मड़रिहा १५. चिनहरी

१. दुबे वंश

- वत्स गोत्र में निम्नलिखित दुबे या द्विवेदी वंश प्राप्त हैं, इनकी पंक्ति नहीं है :–

  १. भरौली २. वकुलारि ३. विमछी ४. समदारि या समदरिया

१. मिश्र वंश

- वत्स गोत्र में मिश्र वंश के मूल स्थान निम्नलिखित हैं, जिनकी पंक्ति आज भी बनी है :–

  १. पयासी २. रतनमाला ३. नगरहा ४. गाना ५. बनकटा

  ६. मणकढ़ा ७. बेलौरा ८. करिहैंया ९. दोगारी

- यथासमय इन स्थानों के वंशज अन्य स्थानों में चले गये अतः आज उस स्थान के नाम से जाने जाते हैं; इनकी पंक्ति टूट गई है :–

१. पयासी वंशज जिन स्थानों में गए :–

  १. भरौलिया २. गोपालपुर ३. बीजापुर ४. जिगना ५. वैरिया

  ५. भिटहा ६. छपिया ७. विजरा ८. कतरारी

  ९. वैरिया १०. परसिया ११. मुड़िसा १२. रानीपुर

२. करिहैंया के वंशज जिन स्थानों में गए :–

  १. करिहांव २. दियावाती ३. मेहदावल

३. मणिकढ़ा के वंशज निम्न स्थान में गए :–

  १. खुदिया २. बघौरा ३. चिमखा ४. वैनुआ

४. गाना के वंशज–१. त्यौंठा २. वरवरिया ३. वैरिया ४. चकदहा

५. वेलौरा के वंशज –

  १. पानन २. चिमखा ३. पघौरा ४. मझौलिया

  ५. सुलतानपुर ६. पकरिया

६. वनकटा तथा नगरहा के वंशज

  १. अघैला २. सखुई ३. तिलकपुर ४. सलेमपुर

  ५. रेवली ६. चैनपुर

नोट - ● वैरिया में पयासी तथा गाना दोनों के वंशज गए।

● एक वंशावली लेखक ने चकदहा तथा मझौलिया की पंक्ति होना लिखा है, किन्तु कोई प्रमाण नहीं दिया, इस लेखक ने उक्त स्थानों में खोजा पंक्ति नहीं मिली।

॥ अन्य मिश्र वंश ॥

● वत्स गोत्र में अन्य मिश्र वंश भी प्राप्त हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. अमिहा २. उमरी ३. नवापार ४. परसैनी ५. प्रमानिका

६. प्योली ७. वनपरवा पिपरा ८. मलपुरा ९. मझियारी

४. तिवारी वंश

● वत्स गोत्र में निम्नलिखित "तिवारी" वंश भी होते हैं।

● इन तिवारी वंश की पंक्ति नहीं है।

१. कूड़ा २. गाजर ३. धुरियापार ४. धर्मपुर ५. विरई

टिप्पणी – ● एक वंशावली लेखक ने मलपुरा मिश्र को पंक्ति में लिखा है, किन्तु मलपुरा स्थान के मिश्र अपने को पंतिहा नहीं कहते हैं।

● एक लेखक ने महावन मिश्र को गौतम तथा वत्स दोनों गोत्र मे लिखा है,

किन्तु महावन के मिश्र अपना गोत्र गौतम बताते हैं। वत्स गोत्र के महावन अभी तक इस लेखक को नहीं मिले हैं।

● खैरी वंश के ओझा वत्स गोत्र में भी प्राप्त हैं, किन्तु खैरी का मूल गोत्र उपमन्यु है।

४. उपाध्याय वंश

● वत्स गोत्र में निम्नलिखित उपाध्याय वंश भी होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

१. देवरैया

॥ १० ॥ गोत्र ॥ अत्रि (कृष्णात्रि) ॥

१. वेद – ऋग्वेद २. उपवेद – आयुर्वेद ३. शिखा – वाम

४. शाखा – शाकल्य ५. पाद – वाम ६. देवता – ब्रह्मा

७. सूत्र – आश्वलायन ८. प्रवर – त्रि (तीन)

(१) अत्रि (२) आर्चनानस (३) श्यावाश्व

● **कृष्णात्रि गोत्र** (अत्रि गोत्र भी इसे कहते हैं)

- इस गोत्र में—१. दुबे   २. शुक्ल—होते हैं।
- इनका मुख्य स्थान निम्न हैं :—इन दोनों वंशजों की पंक्ति नहीं है।
- **दुबे** :— १. डुमरिया   २. कुटुरिहा   ३. पढवरिया
- **शुक्ल** :—१. पिछौरा (सत्यकर कान्तित)

॥ १० ॥ अगस्त्य गोत्र ॥

१. वेद – यजुर्वेद   २. उपवेद – धनुर्वेद   ३. शिखा – दाहिन

४. शाखा – माध्यन्दिनी   ५. पाद – दाहिन   ६. देवता – शिव

७. सूत्र कात्यायन   ८. प्रवर – त्रि (तीन)

(१) अगस्त्य   (२) माहेन्द्र   (३) मायोभुव

- **अगस्त्य गोत्र**
  - इस गोत्र में – १. तिवारी २. पांडे – होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।
  - **पांडे का मुख्य स्थान** :—

    १. अगस्त्यपार   २. भौआपार   ३. महसों   ४. बेदौली

- **तिवारी का मुख्य स्थान** :—

  अगस्तपार ही था, किन्तु परिवर्तित काल में निम्न स्थान हो गए हैं :—

  १. तकिया   २. धरहरा   ३. धन्धवार

॥ १२ ॥ कात्यायन गोत्र ॥

१. वेद – यजुर्वेद   २. उपवेद – धनुर्वेद   ३. शिखा – दाहिन

४. शाखा – माध्यन्दिनी   ५. पाद – दाहिन   ६. देवता – शिव

७. सूत्र कात्यायन   ८. प्रवर – त्रि (तीन)

(१) विश्वामिश्र   (२) कात्य   (३) आक्षील

- इस गोत्र में मुख्यतः चौबे होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।
- इनका आदि स्थान—नैपुरा है।
- परिवर्तित काल में मुख्य स्थान—कुशौरा हो गया है।

नोट—कुछ लोग कात्यायन गोत्र को ही वात्स्यायन गोत्र लिखा है।

॥ १३ ॥ चान्द्रायण गोत्र ॥

- इस गोत्र में "वेलौंजा के पांडे" होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ १४ ॥ सांकृत गोत्र ॥

१. वेद – यजुर्वेद २. उपवेद – धनुर्वेद ३. शिखा – दाहिन

४. शाखा – माध्यन्दिनी ५. पाद – दाहिन ६. देवता – शिव

७. सूत्र कात्यायन ८. प्रवर – पंच (५)

(१) कृष्णात्रेय (२) आर्चनानस (३) श्यावास्व (४) सांख्यायन (६) सांकृत

- इस गोत्र में–१. पांडे २. चौबे ३. तिवारी होते हैं।
- **पांडे**–इनका आदि स्थान –मलांव है, जिनकी पंक्ति है।
- परिवर्तित काल में मुख्य स्थान –

  १. नाउर, देउर २. भिलौरा ३. सरया–हो गया है।
- **अन्य पांडे**–इनका आदि स्थान –

  १. कटया २. नई ३. हरदही ४. मैनछिया

- **चौबे**–इनका मुख्य स्थान निम्न है, जिनकी पंक्ति नहीं है।

  १. भौआपार २. नगवा ३. उनवलि ४. देउर

  ५. सरसैया ६. तेलियाडीह ७. सिधैया
- **तिवारी**– १. वारीडीह २. नयपुरा ३. विसुहिया

॥ १५ ॥ सावर्णि / सावर्ण्य गोत्र ॥

१. वेद – सामवेद २. उपवेद – गन्धर्व ३. शिखा – वाम

४. शाखा – कौथुमी ५. पाद – वाम ६. देवता – विष्णु

७. सूत्र – गोभिल ८. प्रवर – पंच (५)

(१) भार्गव (२) च्यावन (३) आप्नवान (४) और्व (५) सावर्ण्य/जामदग्न्य

- **सावर्ण्य गोत्र**–इसे ही सावर्णि गोत्र भी कहते हैं।
  - इस गोत्र में मुख्यतः पांडे होते हैं।
  - **इस गोत्र में मिश्रवंश भी पाया जाता है, जिनका मुख्य स्थान :–**

    "सिसैया" हैं, इनकी पंक्ति नहीं है।

- **पांडेय वंश का मुख्य स्थान निम्न है :–**

१. इटारि २. रैकहट ३. पट्टी दलीपपुर ४. वंशीधर का पुरवा
५. मझगवां ६. चारपानि ७. लहेसरी ८. साहुकोल
९. भसमा १०. टिकरा ११. सखरूआ १२. अमिलीडीह
१३. वारघाट १४. भट्टाचारी १५. ज्वरवा १६. भरोसा के पटख पांडे

- **पांडेय के अन्य वंशज :–**

१. एकौना २. ककेड़ा ३. अष्टकपाल ४. कोनी
५. कोड़ा ६. चमरुपट्टी ७. जामडीह पिछौरा ८. जोरवा
९. टुमके कारी १०. नरहरिया ११. सिसई १२. बधवा
१३. सरया १४. म्युरहा

|| १६ || भार्गव गोत्र ||

१. गोत्र – भार्गव २. वेद – सामवेद ३. शाखा – कौथुमी ४. सूत्र – गोभिल
५. उपवेद – गन्धर्व ६. शिखा – वाम ७. पाद – वाम ८. देवता – विष्णु
९. प्रवर – पंच (५) (१) भार्गव (२) च्यवन (३) आप्तवान
(४) और्व (५) जामदग्न्य

- इस भार्गव गोत्र में "तिवारी" होते हैं।
- इनका आदि स्थान "भागलपुर" जिला देवरिया है।
- परिवर्तित काल में निम्न स्थान हो गए :–जिनकी पंक्ति है :–

१. तुरही पट्टी २. चरणारि ३. हरपुरा

नोट – १. मदनपुर २. सोढ़ा चक्र– के तिवारी भी इसी गोत्र में हैं।

भृगु गोत्र १. **सिंहनजोरी (पंक्ति)** २. **भागर्व परसौनी**

|| १७ || उपमन्यु गोत्र ||

१. वेद – यजुर्वेद २. उपवेद – धनुर्वेद ३. शिखा – दाहिन
४. शाखा – माध्यन्दिनी ५. पाद – दाहिन ६. देवता – शिव
७. सूत्र कात्यायन ८. प्रवर – (त्रि) (३)
(१) वशिष्ठ (२) ऐन्द्र प्रमद (३) आमरद्व सव्य (४) उपमन्यु

उपमन्यु गोत्र

- इस गोत्र में मुख्यतः "ओझा" होते हैं।
- ओझा के मुख्य स्थान :—इनकी पंक्ति है।

  १. करैली २. ओझवलीं ३. अगांव ४. मलांव
- इनकी पंक्ति नहीं है :—

  १. असवनपार २. कुकुआ ३. खैरी ४. निमेज

  ५. वारीगांव ६. रामडीह ७. लगुनी ८. हरजनपुर
- मगदरिया के पाठक भी इसी गोत्र में होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ १८ ॥ वशिष्ठ गोत्र ॥

१. वेद – यजुर्वेद २. उपवेद – धनुर्वेद ३. शिखा – दाहिन

४. शाखा – माध्यन्दिनी ५. पाद – दाहिन ६. देवता – शिव

७. सूत्र – कात्यायन ८. प्रवर – (त्रि) (३)

(१) वशिष्ठ (२) शक्ति (३) पांराशर

- इस वशिष्ठ गोत्र में :—१. मिश्र २. तिवारी ३. पांडे ४. चौबे = होते हैं।

- मिश्र का मुख्य स्थान :—

  १. मार्जनी २. वट्टूपुर ३. खेउसी ४. खेसी

  ५. खोली ६. वढ़नी ७. विजरा
- तिवारी का मुख्य स्थान :—इनकी पंक्ति नहीं है।

  १. मणिकण्ठ २. वंकिवा ३. हरिना (हर्नहा)
- पांडे का मुख्य स्थान :—इनकी पंक्ति नहीं है।

  १. अम्वा २. कोहड़ा ३. धर्महरि
- चौबे का का मुख्य स्थान :—इनकी पंक्ति नहीं है।

  १. मार्जनी

॥ १९ ॥ कौण्डिन्य गोत्र ॥

१. वेद – अथर्ववेद २. उपवेद – अथर्ववेद ३. शिखा – वाम

४. शाखा – शौनकी ५. पाद – वाम ६. देवता – इन्द्र

७. सूत्र – वोधायन ८. प्रवर – (त्रि) (तीन)

(१) आंगरिस (२) वार्हस्पत्य (३) भारद्वाज

● कौण्डिन्य गोत्र में– १. मिश्र २. पांडे होते हैं। ३. कौहली शुक्ल भी प्राप्त है।

● इनकी पंक्ति नहीं है।

● इनका आदि स्थान :–'कौड़ीराम' है।

● **मिश्र** :–१. वंभनौली २. नगरहा (वस्ती) ३. कौहाली

● **पांडे** :– १. पलामू २. वेलौंजा (गंगापार) ३. वड़हरिया

विशेष :–१. वेलौंजा के पांडे – चन्द्रायण गोत्र में भी पाए जाते हैं।

२. धर्महरि (धर्मोरि) के तिवारी का गोत्र 'वरतन्तु है'।

३. सिंगोला के दुबे – का कश्यप गोत्र है।

४. निरौला के दुबे का गोत्र कण्व है।

अन्य ब्राह्मण –

● इस गोत्र में–कौहली शुक्ल भी पाए जाते हैं।

॥ २० ॥ घृत कौशिक गोत्र ॥

१. गोत्र – घृत कौशिक २. वेद – यजुर्वेद ४ शाखा – माध्यन्दिनी

५. सूत्र – कात्यायन ६. प्रवर – त्रि (तीन) ३. उपवेद – धनुर्वेद

६. शिखा – दाहिन ७. पाद – दाहिन ८. देवता – शिव

(१) विश्वमित्र (२) देवरात (३) औदल

● इस गोत्र में मुख्यतः "मिश्र वंश" आता है।

● इनका आदि स्थान "धर्मपुरा" है। ● इनकी पंक्ति नहीं है।

● परिवर्तित काल में इनके निम्नलिखित स्थान बने, जिनकी पंक्ति नहीं है :–

१. धरमपुर लगुनही २. हरदिहा ३. कुशहरा

४. चकूरपुर लगुनी ५. मझौआ अथवा मझौनी

॥ २१ ॥ कुशिक गोत्र ॥

- घृत कौशिक गोत्र के जो वेद-उपवेद-शाखा- सूत्र आदि हैं, वे ही कुशिक गोत्र के भी हैं।
- इस गोत्र में "चौबे वंश" होते हैं।
- इनका मुख्य स्थान है :– १. अली नगर २. हरगढ़ कान्तित

॥ २२ ॥ कौशिक गोत्र ॥

- घृत कौशिक गोत्र के वेद-उपवेद आदि ही इस कौशिक गोत्र का भी वेद-उपवेद आदि हैं।
- इस गोत्र में –१. दुबे २. मिश्र = दो वंश होते हैं।
- इन दोनों वंशों की पंक्ति विवादित हैं।

  मिश्र वंश में – १. सुगौटी २. सुअराटार

  दुबे वंश – १. मीठावेल ब्रह्मपुर
- इन गोत्र में "तिवारी के भी २ वंश प्राप्त हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

  १. बदौलिया २. मठवा

॥ २३ ॥ वरतन्तु गोत्र ॥

- इस गोत्र में धर्महरि धर्मोहरि के त्रिपाठी होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ २४ ॥ कण्व गोत्र ॥

- इस गोत्र में "तिलौरा के दुबे" होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ २५ ॥ मौनस गोत्र ॥

- इस गोत्र में छपवा के द्विवेदी होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ २६ ॥ उद्गाह गोत्र ॥

- इस गोत्र में तिवारी के निम्नलिखित २ वंश प्राप्त है, जिनकी पंक्ति नहीं है।

  १. तुलापुर २. तुर्कौलिया
- इस गोत्र में तुरोरया के पांडे भी होते हैं, जिनकी पंक्ति नहीं है।

॥ शुक्ल वंश—एक दृष्टि में ॥

शुक्ल वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :—१. गर्ग २. परासर ३. कौडिन्य ४. कृष्णात्रि ५. कश्यप

१	अमचोना	पंक्ति है	गर्ग गोत्र	११	छिवरा	पंक्ति है	गर्ग गोत्र
२	एकला	,,	,,	१२	छितुआ	,,	,,
३	कटारि	,,	,,	१३	वय पोखरी	,,	,,
४	खखाइच खोर	,,	,,	१४	बभनी	,,	,,
५	झौवा	,,	,,	१५	वकरुआ	,,	,,
६	ठढ़ौआ	,,	,,	१६	बसौढ़ी	,,	,,
७	थरौली	,,	,,	१७	बनगवा	,,	,,
८	गंगोली	,,	,,	१८	महसों	,,	,,
९	घोरहटा	,,	,,	१९	मेहरा	,,	,,
१०	छितहा	,,	,,	२०	मुड़ेरी	,,	,,

२१	रूदाइन	पंक्ति है	गर्ग गोत्र	१	अजनौरा	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
२२	लखनौरा	,,	,,	२	अकोहरिया	,,	,,
२३	बेवा	,,	,,	३	उचहरिया	,,	,,
२४	भरौलिया	,,	,,	४	उमरहर	,,	,,
२५	भेलखा	,,	,,	५	करंजही	,,	,,
२६	भेंड़ी	,,	,,	६	कनइल	,,	,,
२७	सरदहा	,,	,,	७	ककनाही	,,	,,
२८	सिरसा	,,	,,	८	कुमौंल	,,	,,
२९	सिलहट	,,	,,	९	कोलुआ	,,	,,
३०	मामखोर	,,	,,	१०	ठाठर	,,	,,
३१	रुद्रपुर	,,	,,	११	तुर्कोलिया	,,	,,
३२	छीछापार	,,	,,	१२	धरहट	,,	,,
				१३	गढ़	,,	,,
				१४	गौरा	,,	,,

१५	चाँदागढ़	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
१६	छिलहर	,,	,,
१७	मुंडेरा	,,	,,
१८	जिनवा	,,	,,
१९	जंजन	,,	,,
२०	बरहुचिया	,,	,,
२१	बड़हर	,,	,,
२२	बहेरी	,,	,,
२३	बडिहा	,,	,,
२४	वागापार	,,	,,
२५	वांशपार	,,	,,
२६	विलौड़ी	,,	,,
२७	विहरा	,,	,,

२८	बुड़हरी	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
२९	भेखनौरा	,,	,,
३०	भादी	,,	,,
३१	छोटकी भादी	,,	,,
३२	पिपरा	,,	,,
३३	बलवा	,,	,,
३४	बनगई	,,	,,
३५	बनकट	,,	,,
३६	भेलौंजी	,,	,,
३७	मगहरिया	,,	,,
३८	मझगवां	,,	,,
३९	मटिऔरा	,,	,,
४०	मलेन या मलेन्द्र	,,	,,

४१	महुली	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
४२	महुलिया	,,	,,
४३	नगरहा	,,	,,
४४	महरिहा	,,	,,
४५	मुड़फेकरा	,,	,,
४६	मुंडा	,,	,,
४७	रामनगर	,,	,,
४८	लखन खोरी	,,	,,
४९	सथरी	,,	,,
५०	सरांव	,,	,,
५१	छोटका सरांव	,,	,,
५२	तलहा	,,	,,
५३	वरहट या वुड़हट	,,	,,

५४	वेलौड़ी	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
५५	वेल पोखरि	,,	,,
५६	सियापार	,,	,,
५७	सीपर	,,	,,
५८	सुकुलपुरी या सुकुलपुरा	,,	,,
५९	मंटोली	,,	,,
६०	वकैना	,,	,,
६१	अकौलिया	,,	,,
६२	खोरि पकारि	,,	,,
६३	गोपालपुर	,,	,,
६४	कसैला	,,	,,
६५	इटवा	,,	,,

६६	आमचौरा	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
६७	वाईखौर	,,	,,
६८	लोहरौली	,,	,,
६९	सिपरा पार	,,	,,
७०	जिगिना	,,	,,
७१	जिगनी	,,	,,
७२	गोवरहिया	,,	,,
७३	सिटकिहा	,,	,,
७४	झरकटिया	,,	,,
७५	चिनगहिया	,,	,,
७६	हथरसा	,,	,,
७७	षरलटी	,,	,,
७८	नवागांव	,,	,,
७९	पैंडी	,,	,,
८०	नगरा	,,	,,
८१	दीक्षापार	पंक्ति नहीं है	गर्ग गोत्र
८२	जरहरिया	,,	,,
८३	फकरही	,,	,,
८४	हरदहा	,,	,,
८५	वरेठी	,,	,,
८६	खमहरिया	,,	,,
८७	नगौहा	,,	,,
८८	सहपुरिया	,,	,,
८९	पड़िहा	,,	,,
९०	सत्यकर	,,	,,
९१	वहेरी तलहा	,,	,,
९२	वसौड़ी	,,	,,
९३	तुरकहिया	,,	,,
९४	अंसौजा	..	..

●	कौहली	पंक्ति नहीं	कौडिन्य गोत्र
●	पिछौरा		
	सत्यकान्तित	,,	कृष्णात्रि गोत्र
१	सुरदहा पार	पंक्ति है	कश्य गोत्र
२	सुकरौटी	पंक्ति नहीं	,,
३	सेखुई	,,	,,
४	सुकरौली	,,	,,
१	परसा	पंक्ति है	परासर गोत्र
२	परसाडीह	पंक्ति है	परासर गोत्र
३	परिगवां	,,	,,
४	नगवां वरौंचा	पंक्ति नहीं	,,
५	नेवारी	,,	,,
६	नगरहा	,,	,,
७	पिकौरा	,,	,,
८	वूढापार हंसा कान्तित	,,	,,

१. नगरहा शुक्ल – १. गर्ग गोत्र २. परासर गोत्र = दोनों में प्राप्त है।

२. वंशावली लेखकों ने–१. वहेरी २. तलहा = अलग-अलग वंश लिखा है। किन्तु इस लेखक को वहेरी तलहा एक ही वंश प्राप्त है, फिर भी इसमें १. वहेरी २. तलहा – दोनों को अलग-अलग तथा एक जगह दोनों बातें लिख दी हैं। ३. छीछापार की पंक्ति विवादित है।

॥ तिवारी वंश–एक दृष्टि में ॥

तिवारी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. गर्ग २. भारद्वाज ३. कश्यप ४. वत्स ५. अगस्त्य

६. सांकृत ७. भार्गव ८. वशिष्ठ ९. वरतन्तु १०. शाण्डिल्य

१	सरया	पंक्ति है	शाण्डिल्य गोत्र
२	सोहगौरा	,,	,,
३	झुड़िया	,,	,,
४	देवरवा	,,	,,
५	बलुआ	,,	,,
७	धानी	,,	,,
८	सोपरी	,,	,,
९	चेतिया	,,	,,
१०	परतावल	,,	,,
११	हरदी	,,	,,
१२	सोनौरा	पंक्ति है	शाण्डिल्य गोत्र
१३	कटियारी	,,	,,
१४	टांणा	,,	,,
१५	मुंजौना	,,	,,
१६	मंगराइच	,,	,,
१७	सोनापार	,,	,,
१८	संवेजी	,,	,,
१९	चंदरौटा	,,	,,
२०	छितौनी	,,	,,

२१	परसार	पंक्ति है	शाण्डिल्य गोत्र
२२	बसन्तपुरा	,,	,,
२३	वसडाला	,,	,,
२४	डीरीडीहा	,,	,,
२५	धर्मपुर	,,	,,
२६	पीपर पाती	,,	,,
	(पिंपाती)	,,	,,
२७	भरुहिया	,,	,,
२८	उनवलिया	,,	,,
२९	कटवन	,,	,,
३०	कपालगढ़	,,	,,
३१	चौका	,,	,,
३२	चौधरी पट्टी	,,	,,
३३	मकदूमपुर	पंक्ति है	शाण्डिल्य गोत्र
३४	सोनौरा	,,	,,
३५	रुद्रपुर	,,	,,
३६	लोनापार	,,	,,
३७	भाटे	,,	,,
३८	वसावनपुर	,,	,,
३९	पाला	,,	,,
४०	लोनाखार	,,	,,
४१	मदनपुर	,,	,,
४२	साहरना	,,	,,
४३	पीड़ी	,,	,,
४४	विनवलिया	,,	,,
४५	वूढ़ीवारी	,,	,,

४६	भिलौनौ	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
४७	वंसडिला	,,	,,
४८	अतरौली	,,	,,
४९	बहुआरी	,,	,,
५०	कोठा या कोठी	,,	,,
५१	मऊ	,,	,,
५२	गहना	,,	,,
५३	तुलसी	,,	,,
५४	भलुआनी	,,	,,
५५	पचरुखिया	,,	,,
५६	कुठौली	,,	,,
५७	सिसवा	,,	,,
५८	लेदवा	,,	,,
५९	वटियावारी	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
६०	तलिवाबाद	,,	,,
६१	वंधना	,,	,,
६२	सेमरी रथ वर्ग	,,	,,
६३	देवरिया	,,	,,
६४	वरपार	,,	,,
६५	ऊधवपुर	,,	,,
६६	हथिया परास	,,	,,
६७	यमुना	,,	,,
६८	कपरगढ़	,,	,,
६९	खोरमा	,,	,,
७०	गोनौरा	,,	,,
७१	नेवास	,,	,,

७१	नकौझा	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
७३	बुढ़िया वारी	,,	,,
७४	सेमरी	,,	,,
७५	चौरी	,,	,,
७४	खर्दहा	,,	,,
७७	गोपीकंद	,,	,,
७८	मुंगेरा	,,	,,
७९	घोडनर	,,	,,
८०	डिमहा के तिवारी	,,	,,
८१	अंगोरी	,,	,,
८२	गुरम्ही / गुर्गी	,,	,,
८३	चौसा	,,	,,
८४	वेसापार	,,	,,
८५	नौसड़िया	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
८६	उकिंना	,,	,,
८७	कोहिला	,,	,,
८८	छपरा	,,	,,
८९	देवा	,,	,,
९०	डेहरा समार्जनी	,,	,,
९१	निगुहिया	,,	,,
९२	परसौनी	,,	,,
९३	कसिहारी	,,	,,
९४	गोंडलिया	,,	,,
९५	कलानी	,,	,,
९६	गोगिया	,,	,,
९७	निदिया	,,	,,

९८	दुर्गौलिया	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
९९	शंकराचार्य- दुर्गौलिया	,,	,,
१००	नदौली	,,	,,
१०१	पहिला	,,	,,
१०२	कुकुरगड़िया	,,	,,
१०३	चरथरी	,,	,,
१०४	कटियारी	,,	,,
१०५	गोरखपुरिया	,,	,,
१०६	झकही	,,	,,
१०७	नेवास- छोटा-बड़ा	,,	,,
१०८	धतुरा	,,	,,
१०९	निर्मोहिया	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
११०	वासगांव	,,	,,
१११	कौहली	,,	,,
११२	चिउटहा	,,	,,
११३	कांधापार	,,	,,
११४	चौरिहा	,,	,,
११५	तिवारीपुर	,,	,,
११६	नैयापार	,,	,,
११७	डाईनवारी	,,	,,
११८	नैनसार	,,	,,
११९	भरवलिया	,,	,,
१२०	रणौली	,,	,,
१२१	भाटपार	,,	,,

१२२	रूहटा	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
१२३	सोढ़ा चक्र	,,	,,
१२४	सोनहुला	,,	,,
१२५	भार्गव	,,	,,
१२६	सितिया	,,	,,
१२७	मिरहामाटी	,,	,,
१२८	लखनापार	,,	,,
१२९	सौरेजी	,,	,,
१३०	भांटी	,,	,,
१३१	वेदुआ	,,	,,
१३२	भौआपार	,,	,,
१३३	सिसवा	,,	,,
१३४	गजपुरिहा	,,	,,
१३५	शौकनहा	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
१३६	भैंसहा	,,	,,
१३७	भठवा	,,	,,
१३८	महुलवार	,,	,,
१३९	सेवई	,,	,,
१४०	चौमुखा	,,	,,
१४१	वारीपुर	,,	,,
१४२	भरमहा	,,	,,
१४३	रखुवाखोर	,,	,,
१४४	सोनाई	,,	,,
१४५	धुरियापार	,,	,,
१४६	पुहिला	,,	,,
१४७	सीधावल	,,	,,

१४८	सिहिनपोरी	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
१४९	भरसहा	,,	,,
१५०	मिटहाभीटी	,,	,,
१५१	खझुओनी	,,	,,
१५२	पिपरी	,,	,,
१५३	पौड़ी	,,	,,
१५४	पुरैना	,,	,,
१५५	पोरिहा	,,	,,
१५६	वदरा	,,	,,
१५७	सिकौथा	,,	,,
१५८	चौधरी पट्टी	,,	,,
१५९	वुटिहा	,,	,,
१६०	मसोंढ़	,,	,,
१६१	मसौली	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
१६२	हड़गही	,,	,,
१६३	कौलिहा	,,	,,
१६४	कोल्हुआ	,,	,,
१६५	परसिया	,,	,,
१६६	वारहगांव	,,	,,
१६७	वामपुर	,,	,,
१६८	वतगैयां	,,	,,
१६९	वारहसेनी	पंक्ति है	,,
१७०	तुरही पट्टी	पंक्ति नहीं है	भार्गव गोत्र
१७२	चरणारि	,,	,,
१७३	गुरौली	,,	,,
१७४	हरपुरा	,,	,,

१७५	इटिया	पंक्ति है	गर्ग गोत्र
१७६	विष्णुपुर	पंक्ति नहीं है	,,
१७७	धवरहरा	पंक्ति है	पराशर
१७८	धमौली	पंक्ति नहीं है	,,
१७९	वकिया	,,	वशिष्ठ गोत्र
१८०	हरनहा-हरिना	,,	,,
१८१	मणिकण्ठ	,,	,,
१८२	खमरौनी	,,	भारद्वाज
१८३	पिपरा गौतम	,,	,,
१८४	वड़हरा	,,	,,
१८५	धर्महरि- (धर्मौरि)	पंक्ति नहीं है	वरतन्तु
१८६	नथपुरा	,,	सांकृत
१८७	वारीडीह	पंक्ति नहीं है	सांकृत
१८८	नई	,,	,,
१८९	नयपुरा	,,	,,
१९०	नाउरदेवर	,,	,,
१९१	विसुहिया	,,	,,
१९२	वेदौलिया	,,	कौशिक
१९३	भठवा	,,	,,
१९४	तुलापुर	,,	उद्वाह
१९५	तुर्कौलिया	,,	,,
१९६	भार्गव परसौनी	,,	भृगु
१९७	सिहनजोरी	पंक्ति है	,,
१९८	हरपुरा	पंक्ति नहीं है	,,
१९९	फरेंदा	,,	सावर्ण्य

२००	वंधवा	पंक्ति नहीं है	सावर्ण्य
२०१	नरहरिया	,,	,,
२०२	टुम टेकारी	,,	,,
२०३	नकहट	,,	,,
२०४	दलीवपुर	,,	,,
२०५	इटोढ़ी	पंक्ति है	,,
२०६	नंदुला	,,	वत्स
२०७	विष्टवल	पंक्ति नहीं है	,,
२०८	वांसपार	,,	,,
२०९	विन छनैया	,,	,,
२१०	वनहां	,,	,,
२११	नागचौरी	,,	,,
२१२	इमलडीहा	,,	,,
२१३	नाथूपुर त्रिफला	पंक्ति नहीं है	वत्स
२१४	खजुली	,,	,,
२१५	पुहिला	,,	,,
२१६	कूड़ा	,,	,,
२१७	गाजर	,,	,,
२१८	धुरियापार	,,	,,
२१९	वड़हरिया	,,	कौडिन्य
२२०	तकिया	पंक्ति नहीं है	अगस्त्य गोत्र
२२१	धरहरा	,,	,,
२२२	धन्धवार	,,	,,

॥ मिश्र वंश–एक दृष्टि में ॥

- मिश्र वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. गौतम २. शाण्डिल्य ३. वत्स ४. वशिष्ठ ५. भारद्वाज ६. कश्यप ७. कौडिन्य ८. पराशर ९. कौशिक १०. घृत कौशिक ११. सावर्ण्य

१	मधुवनी	पंक्ति है	गौतम गोत्र
२	भरसा (भरसी	,,	,,
३	भभया	,,	,,
४	जिगना	,,	,,
५	कारी गांव	,,	,,
६	गोपालपुर	,,	,,
७	वस्ती	,,	,,
८	वरईपार	,,	,,
९	वरईपुर	,,	,,
१०	रतनपुर	,,	,,
११	मिजौलिया	पंक्ति है	गौतम गोत्र
१२	मठिया	,,	,,
१३	सिंहपुर	,,	,,
१४	सेंदुरिया (एंदुरिया)	,,	,,
१५	डुमरांव	,,	,,
१६	भार्गव	,,	,,
१७	चचाई	,,	,,
१८	चम्पारन	,,	,,
१९	चौमुखा	,,	,,
२०	भरौलिया	,,	,,

२१	वासगांव	पंक्ति है	गौतम गोत्र
२२´	चकदहा	,,	,,
२३	चकौड़ा	,,	,,
२४	चारडीह	,,	,,
२५	डुमरी	,,	,,
२६	नरइपुर या नरईपट्टी	,,	,,
२७	पतिलाड़	,,	,,
२८	व्यहसी या वेसी	,,	,,
२९	अलेहा	,,	,,
३०	खदरा	,,	,,
३१	हत्यरवा	,,	,,
३२	खरगपुर	,,	,,
३३	रठेड़ा	,,	,,
३४	कपिशा	,,	,,
३५	वाघेडीहा	पंक्ति है	गौतम गोत्र
३६	फरिगैयां	,,	,,
३७	महुई	पंक्ति नहीं है	गौतम गोत्र
३८	कारीडीह	,,	,,
३९	मटियारी	,,	,,
४०	पिपरा	,,	,,
४१	वाऊडीह	,,	,,
४२	रापतपुर	,,	,,
४३	अखर चंदा	,,	,,
४४	कटगैयां	,,	,,
४५	कविशा	,,	,,
४६	कपालगौतम	पंक्ति नहीं है	गौतम गोत्र
४७	कोटवा	,,	,,
४८	खरगगांव या खरड़र गांव	,,	,,

४९	गैती	पंक्ति नहीं है	गौतम गोत्र
५०	गोईड़ौरा	,,	,,
५१	गौतम	,,	,,
५२	पड़रहा	,,	,,
५३	फरिआ	,,	,,
५४	वसन्तपुर	,,	,,
५५	महावन	,,	,,
५६	रामपुर	,,	,,
५७	अज़यासी या भजयासी या भजयाइसी	,,	,,
५८	भिटहा	,,	,,
५९	भैंरोपुर	,,	,,
६०	सोनाखार	,,	,,
६१	हथियाखार	,,	,,
६२	डोलिहा	पंक्ति नहीं है	गौतम गोत्र
६३	कुशहर	,,	,,
६४	चतुरी	,,	,,
६५	चड़रहा	,,	,,
६६	तिलकपुर	,,	,,
६७	दियावाती	,,	,,
६८	गरियैयां	,,	,,
७९	धोतीगांव	,,	,,
७०	पिड़िया	,,	,,
७१	वालेडीहा	,,	,,
७२	ब्रह्मपुर	,,	,,
७३	हरखपुरा मिसिर	,,	,,
७४	फरिएआ	,,	,,
७५	कुशहरा-कुसुमी	,,	,,

१	गाना	पंक्ति है	वत्स गोत्र
२	पयासी	,,	,,
३	वघौरा	,,	,,
४	वनकटा	,,	,,
५	मलपुरा	,,	,,
६	मझौलिया	,,	,,
७	भरौलिया	,,	,,
८	छपिया	,,	,,
९	रतनमाला	,,	,,
१०	वेलौरा	,,	,,
११	करिहैंया	,,	,,
१२	दोगारी	,,	,,
१३	अचैला	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
१४	अमिहा	,,	,,
१५	उमरी	,,	,,
१६	नगरहा	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
१७	नवापार	,,	,,
१८	टिउटा	,,	,,
१९	धरममऊ	,,	,,
२०	नगवर	,,	,,
२१	परसौनी	,,	,,
२२	प्रमानिका	,,	,,
२३	प्योली	,,	,,
२४	वखरिया	,,	,,
२५	वनपरवा पिपरा	,,	,,
२६	मड़कढ़ा	,,	,,
२७	ममिआरी	,,	,,
२८	भिटहा	,,	,,
२९	तिवठा	,,	,,
३०	रेवली पयासी	,,	,,

१	गोपालपुर	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
२	वीजापुर	,,	,,
३	जिगना	,,	,,
४	कतरारी	,,	,,
५	वैरिया	,,	,,
६	परसिया	,,	,,
७	मुड़िसा	,,	,,
८	रानीपुर	,,	,,
९	करिहांव	,,	,,
१०	मेहदावल	,,	,,
११	खुदिया	,,	,,
१२	चिमखा	,,	,,
१३	वैनुआ	,,	,,
१४	वरवरिया	,,	,,
१५	चंकदहा	,,	,,
१६	पानन	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
१७	पधौरा	,,	,,
१८	सुल्तानपुर	,,	,,
१९	पकरिया	,,	,,
२०	सखुई	,,	,,
२१	तिलकपुर	,,	,,
२२	सलेमपुर	,,	,,
२३	रेवली	,,	,,
२४	चैनपुर	,,	,,
२५	वेहसी	,,	,,
२६	वेलउर	,,	,,
२७	खेउसी या खेसी	,,	वशिष्ठ गोत्र
२८	खोली	,,	,,
२९	वट्टूपुर	,,	,,

३०	वढ़नी	पंक्ति नहीं है	वशिष्ठ गोत्र
३१	मारजनी मधुवनी	,,	,,
३२	विजरा	,,	,,
१	भौंरहा	,,	भारद्वाज गोत्र
२	गजपुरिहा	,,	,,
३	गौर	,,	,,
४	मझरिया	पंक्ति है	,,
५	वभनौली	पंक्ति नहीं है	कौडिन्य
६	नगरहा वस्ती	,,	,,
७	कौहाली	,,	,,
८	मिसिरमऊ	,,	पराशर गोत्र
९	धौरहा	,,	,,
१०	सुगौटी	पंक्ति नहीं है	कौशिक गोत्र
११	मझौआ या मझौना	,,	घृत कौशिक गोत्र
१२	लगुनी	,,	,,
१३	लगुनही	पंक्ति नहीं है	घृत कौशिक गोत्र
१४	हरदिहा	,,	,,
१५	कुशहरा	,,	,,
१६	चकूरपुर लगुनी	,,	,,
१७	धरमपुरा	,,	,,
१८	राल्ही/राड़ी	,,	कश्यप गोत्र
१९	मिसरौलिया	,,	,,
२०	परमेश्वरपुर	,,	,,
२१	रमौली	,,	,,
२२	सिसई	,,	सावर्ण्य गोत्र
२३	सिसैया	,,	,,
२४	जिरासों	,,	शाण्डिल्य गोत्र
२५	लालमनि	पंक्ति नहीं है	शाण्डिल्य गोत्र
२६	पिपरा	,,	,,
२७	पड़रहा कान्तित	,,	,,

|| पाण्डेय वंश–एक दृष्टि में ||

- पाण्डेय वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

  १. सावर्ण्य २. कश्यप ३. वत्स ४. सांकृत ५. अगस्त्य ६. गर्ग
  ७. पराशर ८. वशिष्ठ ९. गौतम १०. भारद्वाज ११. कौडिन्य
  १२. गार्ग्य १३. उद्वाह

१	इटारि	पंक्ति है	सावर्ण्य गोत्र
२	पट्टी दिलीपपुर	,,	,,
३	एकौना	पंक्ति नहीं है	,,
४	ककेड़ा	,,	,,
५	अष्टा कपाल	,,	,,
६	कोनी	,,	,,
७	कोड़हा	,,	,,
८	चमरू पट्टी	,,	,,
९	चारपानी	,,	,,
१०	जामडीह पिछौरा	पंक्ति नहीं है	सावर्ण्य
११	जोरवा	,,	,,
१२	दुमेटकारी	,,	,,
१३	नकहट	,,	,,
१४	नरहरिया	,,	,,
१५	बधवा	,,	,,
१६	लहेसड़ी	,,	,,
१७	सरया	,,	,,
१८	सखरूआ	,,	,,

१९	रकहट	पंक्ति नहीं है	सावर्ण्य
२०	भट्टाचारी	,,	,,
२१	भसमा	,,	,,
२२	म्युरहा	,,	,,
२३	टिकरा सावर्ण्य	,,	,,
२४	साहूकोल	,,	,,
२५	सिसई	,,	,,
२६	मझगवां	,,	,,
२७	इन्द्रपुर	,,	,,
२८	वारघट	,,	,,
२९	अमिलीडीह	,,	,,
३०	करैदा	,,	,,
३१	ज्वरवा सावर्ण्य	,,	,,
३२	भरोसा के पटखपांडे	,,	,,
३३	वंशीधर का पुरवा	,,	,,
३४	वारह कोनी	पंक्ति है	कश्यप
३५	परसिया	पंक्ति नहीं है	,,
३६	अध्युर्य	,,	,,
३७	आसापूरी	,,	,,
३८	खूटवा	,,	,,
३९	वनगैयां	,,	,,
४०	वारहगांव	,,	,,
४१	वामपुर	,,	,,
४२	त्रिफला	,,	,,
४३	जगदीशपुर	,,	,,
४४	नाथपुर	,,	,,
४५	फरेदा	,,	,,
४६	नंदुला	,,	,,
४७	गौरा	,,	,,
४८	विसनैया	,,	,,

४९	नागचौरी	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
५०	वनहां	,,	,,
५१	सोनफेरवा	,,	,,
५२	तुलापुर	,,	,,
५३	तुर्कौलिया	,,	,,
५४	वांसपार	,,	,,
५५	विछनेथा	,,	,,
५६	विष्टवल	,,	,,
५७	मझरिया	,,	,,
५८	मड़रिहा	,,	,,
५९	चिनहरी	,,	,,
६०	परसिया	,,	,,
६१	वेलवा	,,	,,
६२	विलौंजा	,,	,,
६३	कटयां	,,	,,
६४	नई	पंक्ति नहीं है	वत्स गोत्र
६५	नउर देउर	,,	,,
६६	भेलौरा	,,	,,
६७	हरदही	,,	,,
६८	मैनछियां	,,	,,
६९	मलांव	,,	,,
७०	अगस्तपार	,,	अगस्त
७१	भौआपार	,,	,,
७२	महसों	,,	,,
७३	वेदौली	,,	,,
७४	अगस्तिया	,,	,,
७५	गुड़ेगांव	,,	गर्ग
७६	इटिया	,,	,,
७७	सिलासत	,,	पराशर
७८	तुर्यापार	,,	,,

७९	धमौली	पंक्ति नहीं है	पराशर
८०	वामपुर	,,	,,
८१	सिला	,,	,,
८२	सोहनपार	,,	,,
८३	धवरहरा	,,	,,
८४	धर्महरि	,,	वशिष्ठ
८५	अम्बा	,,	,,
८६	कोहड़ा	,,	,,
८७	वशिष्ठ	,,	,,
८८	कुढ़परिया	,,	गौतम
८९	भटगवां	,,	,,
९०	पिपरा गौतम	,,	भारद्वाज
९१	मचइया कौसड़	,,	,,
९२	वड़हरा	,,	,,
९३	लखनापार	,,	,,
९४	सौनौरा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
९५	मसोढ़	,,	,,
९६	पुरैना	,,	,,
९७	बलुआ	,,	,,
९८	सिसवा	,,	,,
९९	वाबूमठियारी	,,	,,
१००	बड़हरिया	,,	,,
१०१	पलामू	,,	कौडिन्य
१०२	वेलौंजा गंगापार	,,	,,
१०३	ठोकवा के पान्डे	,,	गार्ग्य
१०४	इटिया	,,	,,
१०५	तुरोरया	,,	उद्वाह

॥ द्विवेदी वंश–एक दृष्टि में ॥

- द्विवेदी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. कृष्णात्रि २. भारद्वाज ३. गार्गेय ४. कश्यप
५. मौनस ६. कण्व ७. वत्स ८. गौतम

१	कुटरिहा	पंक्ति नहीं है	कृष्णात्रि
२	पटवरिया	,,	,,
३	डुमरिया	,,	,,
४	वढ़ैया	पंक्ति है	भारद्वाज
५	धाराधरी	,,	,,
६	नकाही	,,	,,
७	रमलपुर	,,	,,
८	शरारि	,,	,,
९	मझौआ	,,	,,
१०	रमवापुर	,,	,,
११	कुंचेला	पंक्ति नहीं है	,,
१२	केरहटा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
१३	नीवी	,,	,,
१४	पड़रिहा	,,	,,
१५	पुछेला	,,	,,
१६	वडगो या वृहद् ग्राम	,,	,,
१७	वड़ागांव	,,	,,
१८	मीठावेल	,,	,,
१९	समारी	,,	,,
२०	झझवा/संझवा	,,	,,
२१	सौरार सावर्ण्य	,,	,,
२२	हड़गही	,,	,,

२३ वेलवा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
२४ वेलौरा	,,	,,
२५ वड़गइया	,,	,,
२६ भरसड़ा	,,	,,
२७ बबुलिया	,,	,,
२८ मुड़हा	,,	,,
२९ मानघाटी	,,	,,
३० पटवरिया	,,	,,
३१ कुंडवलिया	,,	,,
३२ सौरी	,,	,,
३३ सेंधवा	,,	,,
३४ ठंठनवापुर	,,	,,
३५ गुदामपुर	,,	,,
३६ पारा	,,	,,
३७ वरईपट्टी	,,	,,

३८ उचेला	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
३९ उचैला	,,	,,
४० सेजरूआ	,,	,,
४१ वड़हरा	,,	,,
४२ छपहा	,,	,,
४३ विनवेदी वाले	,,	,,
४४ अमवा	,,	गार्गेय
४५ काटां	,,	,,
४६ कठकुआं	,,	,,
४७ कोड़रिहा	,,	,,
४८ लड़ियाई	,,	,,
४९ कोडवार-कोडवरिया	,,	,,
५० महुलिया	,,	,,
५१ पोहला	,,	,,
५२ भीटी	,,	,,

५३ परौहा/पटौहा	पंक्ति नहीं है	गार्गेय
५४ मझवां	,,	,,
५५ वघोर	,,	,,
५६ खुर्दहा महुलियार	,,	,,
५७ चौकड़ी	,,	,,
५८ मोहल	,,	,,
५९ कांचनी	,,	गौतम
६० वत्सपार	,,	,,
६१ ब्रह्मसारी	,,	,,
६२ गौरा	,,	,,
६३ सिगौला	,,	,,
६४ निलौरा	,,	,,
६५ परवा कान्तित	,,	,,
६६ छपवा	,,	मौनस
६७ तिलौरा	,,	कण्ड

६८ लेजुरिहा	पंक्ति नहीं है	वत्स
६९ समदरया-समदारि	,,	,,
७० ब्रह्मो-ब्रह्मपुर	,,	,,
७१ भरौली	,,	,,
७२ बकुलारि	,,	,,
७३ बिभटी	,,	,,
७४ काचंनिया	,,	गौतम
७५ खरखदिया	,,	,,
७६ कांचनी-गुर्दवान	,,	,,
७७ वरपार	,,	,,
७८ जलालपुर	,,	,,
७९ तिवारी	,,	,,
८० तिलसरा	,,	,,
८१ मझौरा	,,	,,
८२ लठिआही	,,	,,

८३ महुआ	पंक्ति नहीं है	गौतम		८७ रजहटा	पंक्ति नहीं है	गौतम
८४ रूपहलिया	,,	,,		८८ धनौलि	,,	,,
८५ गोपालपुर	,,	,,		८९ वढ़यापार	पंक्ति मानी जाती है	,,
८६ गहरी	,,	,,				

॥ चतुर्वेदी वंश—एक दृष्टि में ॥

- चतुर्वेदी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :— १. कात्यायन २. सावर्ण्य ३. भारद्वाज ४. कश्यप ५. कुशिक ६. वशिष्ठ

१	कुशौरा	पंक्ति नहीं है	कात्यायन		७	सोनवर्सा	पंक्ति नहीं है	कश्यप
२	एकौना	,,	सावर्ण्य		८	विशनपुर (नैपुरा कान्तित)	,,	,,
३	(मंडा) मलौली	,,	भारद्वाज		९	अलीनगर	,,	कुशिक
४	टूनघटा	,,	,,		१०	हरगढ़कान्तित	,,	,,
५	बलुआ	,,	,,		११	मार्जनी	,,	वशिष्ठ
६	बूवा	,,	,,					

॥ ओझा वंश—एक दृष्टि में ॥

- चतुर्वेदी वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :— १. कश्यप २. उपमन्यु

१	ओझवली या ओझौली	पंक्ति है	उपमन्यु		५	वारीगांव	पंक्ति नहीं है	उपमन्यु
२	करैली	,,	,,		६	रामडीह	,,	,,
३	अगांव	,,	,,		७	लगुनी	,,	,,
४	मलांव	,,	,,		८	हरजनपुर	,,	,,
१	असवनपार	पंक्ति नहीं है	,,		१	निमनियां	,,	कश्यप
२	कुकुआ	,,	,,		२	वेनुआ टीकर	,,	,,
३	खैरी	,,	,,		३	भैंसढ़िया	,,	,,
४	निमेज	,,	,,		४	रजौली	,,	,,

॥ दीक्षित वंश ॥

१. कीलपुर पंक्ति नहीं है शाण्डिल्य

॥ पाठक वंश–एक दृष्टि में ॥

● पाठक वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–१. कश्यप २. उपमन्यु ३. भारद्वाज

१	खरहटिया	पंक्ति नहीं है	कश्यप	१०	हुरवा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
२	विजोर	,,	,,	११	पातुलखा	,,	,,
३	मगदरिया	,,	उपमन्यु	१२	देवगांव	,,	,,
४	देंउआपार	,,	भारद्वाज	१३	विजौरा	,,	,,
५	सोनौरा	,,	,,	१४	मसोढ़	,,	,,
६	गोपालपुर	,,	,,	१५	मैंसोना	,,	,,
७	सोनामसोढ़	,,	,,	१६	मगहरिया	,,	,,
८	चापतारा	,,	,,	१७	बूढ़ीपार	,,	,,
९	रहटौली	,,	,,				

॥ उपाध्याय वंश–एक दृष्टि में ॥

● उपाध्याय वंश निम्न गोत्रों में प्राप्त हैं :–

१. गौतम २. परासर ३. भारद्वाज ४. कश्यप ५. वत्स

१	पीपरडीहा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज	११	वरौली	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
२	खोरिया	,,	,,	१२	विष्णुपुर	,,	,,
३	गजपुरिया	,,	उपमन्यु	१३	भरसांड़	,,	,,
४	गौर	,,	भारद्वाज	१४	मसौली	,,	,,
५	चिकनिया	,,	,,	१५	राईमऊ	,,	,,
६	तोसवा-तोसवार	,,	,,	१६	रुद्रपुर	,,	,,
७	नयपुरा	,,	,,	१७	लखिमा	,,	,,
८	पकड़ी	,,	,,	१८	लमकुश	,,	,,
९	पडैया डांड	,,	,,	१९	हड़गड़ी	,,	,,
१०	वरौली	,,	,,	२०	हरैया	,,	,,

२१ दहेंड़ा	पंक्ति नहीं है	भारद्वाज
२२ दुधौरा	,,	,,
२३ जौतिहा	,,	,,
२४ मौनिछ	,,	,,
२५ खौंखरिया	,,	,,
२६ खिरहुआ	,,	,,
२७ वेसवा-टोसवा	,,	,,
२८ भाऊ	,,	,,
२९ निपनियां	,,	,,
३० खिरहुआ	,,	,,
३१ सुरसती उपाध्याय	पंक्ति नहीं है	गौतम
३२ धनौती	,,	,,
३३ नदुआ चौखरि	,,	,,
३४ पकड़ी	,,	कश्यप
३५ वरौली	,,	,,
३६ भरसांड़	,,	,,
३७ देवरैया	,,	वत्स

॥ जनश्रुति ॥

- चौल काण्ड के मिश्र पूर्व काल में शाण्डिल्य गोत्र के तिवारी थे किन्तु मिश्र वंशीय गुरु आश्रम में पालन-पोषण-चूड़ा कर्म आदि संस्कार होने से उसी आश्रम में उत्तरदायित्व ग्रहण करने के कारण गुरु के वंश "मिश्र" से अभिहित हो गए किन्तु गोत्र शाण्डिल्य ही बताते हैं।
- हस्त ग्राम के उपाध्याय पहले परासर गोत्रीय मिश्र थे किन्तु गहरवार के महाराज श्री कृष्णदेव जी के यहाँ शिक्षा-दीक्षा का पद स्वीकार करने के कारण हस्त ग्राम में बस गए और अपने पद के कारण हस्त ग्राम के उपाध्याय कहे जाने लगे।
- मचैया पांडे = इनका पितृ कुल अगस्त गोत्रीय था और माता भारद्वाज गोत्र की कन्या थी। मातृ कुल में पालन-पोषण और निवास के कारण ये भारद्वाज पांडे कहे जाने लगे। जिस समय महाराज शालिवाहन ने इस क्षेत्र पर अधिकार किया और राज सिंहासन पर आसीन हुए उस समय इन भारद्वाज पांडेय की पूजा कर उन्हें राज मंच प्रदान किया, उसी समय से ये मंचैया पांडेय कहे जाने लगे जो अब मंचैया के पांडेय हो गए हैं इन्हीं

की शाखा से एक वंश महसों राज्य द्वारा पूजित होने पर तरयापार चल गया और वे तरयापार के पांडेय कहे जाने लगे।

- मध्य प्रदेश में– रसनी के दुबे वंश प्राप्त है
- उत्तर प्रदेश में– रसनी मिश्र वंश प्राप्त है।

  (इलाहाबाद के गांव में– रसनिहा मिश्र प्राप्त है।)
- ग्राम रसड़ा, जिला बलिया में कुछ जनौपुर के शुक्ल वंशज हैं, जो डवहा, सीतापुर, बसन्तपुर आदि ग्रामों में विस्तृत हैं, ये अपना गोत्र गर्ग बताते हैं किन्तु ये पांडेजी अथवा शुक्ल वंश के पांडे कहे जाते हैं।
- कौशिक नरेश श्री धुरचन्द्र धुरियापार से पूजित होने पर कांचनी ग्राम के द्विवेदी पहले राज गुरु बने, आगे चल कर इन्हीं के वंशजों ने उक्त राज दरबार में दीवान का पद प्राप्त किया धीरे-धीरे कांचनी-गुरु-दीवान मिलकर कांचनी गुर्दवान बन गया।
- सारन (विहार प्रदेश) में हथुआ राज अपने समय में ख्याति प्राप्त स्टेट था, एक समय इसी स्टेट में एक तालाब खोदा गया, किन्तु अनेक यत्न करने पर भी तालाब में जल नहीं आ सका, उस समय स्टेट के राज गुरु पंडित भेलू दुबे ने जनाग्रह के कारण द्रवित

होकर इसी तालाब में एक लट्ठा गाड़ कर उसी पर चढ़ गए और पवनसुत की स्तुति करने लगे, थोड़ी देर में तालाब जल-प्लावित हो गया, महाराज हथुआ नरेश ने श्री दुबे जी का विशेष सम्मान किया और लठियाही दुबे की उपाधि दी तभी से यह वंश लठियाही दुबे कहा जाने लगा।

॥ इस प्रकार अनेक जनश्रुतियाँ प्राप्त हैं ॥

●